मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

मुंबई
वर्षः 8 अंक 101
गुरुवार, 23 अक्टूबर 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

ऑपरेशन सिंदूर का दर्द अब तक नहीं भूला पाकिस्तानः राजनाथ सिंह

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का हवाला देते हुए कहा कि पाकिस्तान उस दर्द को नहीं भूला है और कहा कि युद्धों ने एक मिश्रित और विषम रूप धारण कर लिया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने लेफ्टिनेंट जनरल राज शुक्ला (सेवानिवृत्त) की पुस्तक 'सिविल मिलिट्री फ्यूजन एज अ मेट्रिक ऑफ नेशनल पावर एंड कॉम्प्रिहेंसिव सिक्योरिटी' के विमोचन समारोह में भाग लेते हुए यह टिप्पणी की।

राजनाथ सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से भारतीय सेना में किए गए ₹साहसिक और निर्णायक₹ सुधारों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद का सृजन भी शामिल है। उन्होंने कहा कि अब युद्ध केवल सीमाओं पर ही नहीं लड़े जाते, बल्कि उन्होंने एक संकर और विषम रूप ले लिया है...पारंपरिक रक्षा दृष्टिकोण अब लागू नहीं होता...हमारी सरकार ने भविष्य के लिए तैयार और मजबूत सशस्त्र बलों के निर्माण के लिए कई साहसिक और निर्णायक सुधार भी किए हैं। ये सुधार भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ हमारी सामरिक स्वायत्तता भी सुनिश्चित करते हैं। इन ऐतिहासिक कदमों में से एक था चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद का सृजन।

वरिष्ठ भाजपा नेता ने घरेलू रक्षा उत्पादन में वृद्धि और भारत के तेजी से रक्षा क्षेत्र में विनिर्माण केंद्र बनने का भी ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, हमने तीनों सेनाओं के बीच असाधारण एकजुटता और एकीकरण देखा... ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को चकनाचूर कर दिया है, और आज भी वह उस दर्द को नहीं भूला है। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक को पढ़ने से

मुझे जो मुख्य सीख मिली है, वह यह है कि नागरिक-सैन्य एकीकरण को केवल एकीकरण के रूप में नहीं, बल्कि एक रणनीतिक प्रवर्तक के रूप में देखा जाना चाहिए... यह प्रक्रिया अब भारत में तेजी से आगे बढ़ रही है... हमने रक्षा विनिर्माण और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा दिया है।

उन्होंने कहा कि रक्षा क्षेत्र में स्टार्टअप्स को बढ़ावा देते हुए, हमने शिक्षा जगत के साथ उद्योग जगत की साझेदारी भी बढ़ाई है। आज, हम रक्षा क्षेत्र के लिए एक विनिर्माण केंद्र के रूप में तेजी से उभर रहे हैं... घरेलू रक्षा उत्पादन अब कुल 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का है। इसमें से निजी क्षेत्र का योगदान लगभग 33,000 करोड़ रुपये है। सरकार ने इस पुस्तक में दिए गए कई सुझावों पर अमल शुरू कर दिया है।

अधिकारी जन समस्याओं के प्रति बनें संवेदनशील, कराएं त्वरित समाधानः आदित्यनाथ

लखनऊ, 22 अक्टूबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर में आयोजित जनता दर्शन में लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। लोगों की समस्या सुनते हुए मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता की समस्याओं पर त्वरित संवेदनशीलता दिखाएं।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायत पर तेजी से कार्रवाई करते हुए गुणवत्तापूर्ण व संतुष्टि परक समाधान कराएं। समस्या लेकर पहुंचे लोगों को मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि सरकार हर समस्या पर प्रभावी कार्रवाई कराएगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में करीब 300 लोगों से मिले। मुख्यमंत्री ने

अधिकारियों को समस्या समाधान हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। अलग-अलग मामलों से जुड़ीं समस्याओं के निस्तारण के लिए उन्होंने संबंधित प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी समस्याओं का निस्तारण समयबद्ध, निष्पक्ष और सन्तुष्टिपरक होना चाहिए।

जमीन कब्जे की शिकायतों पर मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने पुलिस अधिकारियों को भू माफिया के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा यदि कोई दबंग, माफिया किसी की जमीन पर जबरन कब्जा कर रहा हो तो उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई की जाए और गरीबों को उजाड़ने वाले कतई न बख्शे जाएं। जनता दर्शन में हर बार की तरह कुछ लोग इलाज के लिए आर्थिक मदद की गुहार लेकर आए थे।

महागठबंधन एकजुट, सारे भ्रम जल्द दूर हो जाएंगे: अशोक गहलोत

पटना, 22 अक्टूबर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और बिहार चुनाव के लिए पार्टी पर्यवेक्षक अशोक गहलोत ने कहा, तमाम काम बहुत अच्छे से चल रहे हैं। एक-दो दिन में जो भी भ्रम है, वह पूरी तरह दूर हो जाएगा।

पत्रकारों से बातचीत में गहलोत ने स्वीकार किया कि बिहार की 243 विधानसभा सीट में से कुछ पर दोस्ताना मुकाबला की स्थिति बन सकती है, लेकिन उन्होंने इसे किसी बड़े विवाद के रूप में देखने से इनकार किया।

उन्होंने कहा, कभी-कभी कार्यकताओं में उत्साह होता है, स्थानीय परिस्थितियों के चलते ऐसी स्थितियां आती हैं। इसे महागठबंधन की कमजोरी नहीं

बल्कि लोकतांत्रिक जोश के रूप में देखना चाहिए।

सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और वामदलों के बीच जारी आंतरिक मतभेद के चलते महागठबंधन के घटक दल राज्य की कम से कम 11 विधानसभा सीट पर एक-दूसरे के खिलाफ मैदान में हैं।

इस बीच, बिहार कांग्रेस प्रभारी कृष्णा अल्लावरु ने भी राज्य की चुनावी रणनीति को लेकर पार्टी की स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने कहा, बिहार में मुकाबला 243 सीट पर है और यह लड़ाई सीधे तौर पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के खिलाफ है। यह सिर्फ सत्ता की लड़ाई नहीं बल्कि बिहार की जनता और उनके बच्चों के भविष्य की लड़ाई है। अल्लावरु ने विश्वास जताया कि महागठबंधन जनता के मुद्दों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगा और बिहार में बदलाव की बयार लाएगा।

मेहुल चोकसी के प्रत्यर्पण पर भारत ने कसी कमर, बेल्जियम कोर्ट में आर्थर रोड जेल की तस्वीरें पेश कीं

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर। मुंबई की उच्च सुरक्षा वाली आर्थर रोड जेल, जहाँ भगोड़े व्यवसायी मेहुल चोकसी को प्रत्यर्पित किए जाने पर रखा जाएगा, के विस्तृत वास्तुशिल्प चित्र और आंतरिक चित्र, मानवीय हिरासत स्थितियों का आश्वासन देने वाले भारत के हलफनामे के हिस्से के रूप में बेल्जियम की एक अदालत के समक्ष प्रस्तुत किए गए हैं। ये चित्र, जेल की स्थितियाँ बैरक 12, आर्थर रोड जेल, मुंबई शीर्षक वाले छह तकनीकी पत्रों के एक सेट का हिस्सा हैं, जिन्हें केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (उढहऊ) द्वारा तैयार किया गया था और भारतीय अधिकारियों द्वारा जेल सुविधाओं की पर्याप्तता और सुरक्षा को प्रदर्शित करने के लिए दायर किया गया था। चित्रों के अनुसार, बैरक संख्या 12, जिसे चोकसी के लिए इकाई के रूप में नामित किया गया है, लगभग 46.5 वर्ग मीटर (लगभग 500 वर्ग फुट) में फैला है, जिसमें एक मुख्य कमरा, मार्ग, धुलाई क्षेत्र और शौचालय शामिल हैं। यह सुविधा हवादार खिड़कियों, मच्छरदानी, सुरक्षा के लिए ग्रिल वाले दरवाजों, सीसीटीवी निगरानी, सीलिंग फैन और ट्यूबलाइट से सुसज्जित है। इसमें वॉश बेसिन और बहते पानी के साथ शॉवर, साथ ही बेहतर

स्वच्छता के लिए पीवीसी फर्श और दीवार टाइलें भी हैं।

बीम स्तर पर एक मोबाइल जैमर लगाया गया है, और निरंतर निगरानी सुनिश्चित करने के लिए वेंटिलेटर के पास एक सीसीटीवी कैमरा लगाया गया है। हलफनामे में इस बात पर जोर दिया गया है कि इस इकाई का हाल ही में नवीनीकरण किया गया है और यह अंतर्राष्ट्रीय हिरासत मानकों का अनुपालन करती है। यह प्रस्तुतिकरण भारत सरकार द्वारा बेल्जियम की अदालत में दिए गए एक आधिकारिक हलफनामे का हिस्सा है, जहाँ मेहुल चोकसी ने अपने प्रत्यर्पण का विरोध करते हुए अपनी जान को कथित खतरे और भारत में जेल की स्थिति को लेकर चिंताओं का हवाला दिया है। अधिकारियों ने कथित तौर पर ये वास्तुशिल्प दृश्य यह दिखाने के लिए संलग्न किए हैं कि चोकसी को भीड़भाड़ वाले सामान्य वार्डों में नहीं, बल्कि एक अच्छी तरह हवादार, सुरक्षित और निगरानी वाली कोठरी में रखा जाएगा। 5 जून, 2025 की तारीख वाले इन चित्रों पर शैलजा सखारकर (वास्तुकार) और डी. रॉयचौधरी (मुख्य अभियंता, सीपीडब्ल्यूडी, मुंबई-क) के हस्ताक्षर हैं। इनमें कमरे और शौचालय क्षेत्र के विस्तृत 3ऊरेंडरिंग, स्केल प्लान और सेक्शन डायग्राम शामिल हैं, जो आधुनिक डिजाइन और रखरखाव को दर्शाते हैं। प्रत्येक शीट पर सीपीडब्ल्यूडी की मुहर लगी है और इसे मुंबई के एम.के. रोड स्थित प्रतिष्ठा भवन स्थित मुख्य अभियंता कार्यालय की देखरेख में तैयार किया गया है।

तालिबान ने पाकिस्तान के भारत पर लगाए आरोप को किया खारिज

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने पाकिस्तान द्वारा भारत पर लगाए गए आरोप को पूरी तरह खारिज कर दिया है। बता दें कि पाकिस्तान ने हाल ही में अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर हुई झड़पों में भारत की भूमिका होने का आरोप लगाया था, जिसे काबुल ने ₹बेबुनियाद, तर्कहीन और अस्वीकार्य₹ बताया है।

मौजूदा जानकारी के अनुसार, अफगान रक्षा मंत्री मोहम्मद याकूब ने साफ किया कि अफगानिस्तान का मकसद भारत के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह किसी तीसरे देश के खिलाफ कार्रवाई करेगा। याकूब तालिबान के संस्थापक मुल्ला उमर के बेटे हैं और उन्होंने कतरी मीडिया अल जजीरा को दिए इंटरव्यू में कहा कि अफगान नीति कभी भी अपनी जमीन का इस्तेमाल किसी अन्य देश के खिलाफ नहीं करती है और भारत के साथ मजबूत और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में संबंध बनाए रखना प्राथमिकता है।

गौरतलब है कि तालिबान ने हमेशा पाकिस्तान के आरोपों को खारिज किया है, जिसमें उसने तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान जैसे उग्रवादी समूहों को अफगानिस्तान में पनाह देने का आरोप लगाया था। याकूब ने कहा कि हाल की झड़पों के पीछे पाकिस्तान की आक्रामक कार्रवाई, जैसे काबुल पर हवाई हमले, जिम्मेदार हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कतर और तुर्की को शांति समझौते के क्रियान्वयन में मदद और निगरानी करनी चाहिए।

मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर में की गोवर्धन पूजा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को गोरखनाथ मंदिर की गोशाला में विधि विधान से गोवर्धन पूजा की। एक सरकारी विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई। बयान के मुताबिक दीपावली के दिन से ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यहां पर हैं और उन्होंने बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर की गोशाला में गोवर्धन पूजा की। बयान के अनुसार मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों, किसानों और पशुपालकों को गोवर्धन पूजा की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार गोवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई अभिनव कार्यक्रम संचालित कर रही है।

बिहार चुनावः मुद्दों एवं मूल्यों से दूर भागती राजनीति

-ललित गर्ग

बिहार में चुनावी रणभेरी बज चुकी है। हर दल अपने-अपने घोषणापत्र, नारों और वादों के साथ जनता को लुभाने में जुटा है। मंचों पर भाषणों की गरमी है, प्रचार रथ दौड़ रहे हैं, लेकिन इस शोर में सबसे बड़ी कमी है-जनता के असली मुद्दों की आवाज। राजनीति का यह शोर विकास की असली जरूरतों को दबा रहा है। बिहार जैसे राज्य में जहां गरीबी, बेरोजगारी, अपराध, और सामाजिक पिछड़ापन अब भी विकराल रूप में मौजूद हैं, वहां चुनावी विमर्श का इनसे विमुख होना चिंताजनक है। यह लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व चुनाव का विरोधाभास ही नहीं, दुर्भाग्य है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर क्यों बिहार चुनाव में कोई भी दल उन मुद्दों को ईमानदारी से नहीं उठा रहा जो सीधे-सीधे जनता के जीवन से जुड़े हैं? क्यों शराबबंदी, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा, अपराध-माफिया शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे वास्तविक सवाल राजनीतिक एजेंडे से गायब हैं?

बिहार में शराबबंदी एक बड़ा सामाजिक और राजनीतिक मुद्दा रहा है। यह मुद्दा केवल कानून का नहीं, बल्कि नैतिकता, सामाजिक सुधार और जनजीवन की स्थिरता से जुड़ा हुआ है। शराबबंदी की सफलता या विफलता को लेकर जनता के मन में अनेक प्रश्न हैं, क्योंकि इस नीति ने जहां कई परिवारों को विनाश से बचाया, वहीं भ्रष्टाचार, अवैध तस्करी और पुलिसिया मनमानी को भी जन्म दिया। दिलचस्प यह है कि इस बार के चुनाव में लगभग सभी प्रमुख दल इस मुद्दे से दूरी बनाए हुए हैं। एनडीए खेमे के नेता खुलकर इस पर बोलने से बच रहे हैं। केवल प्रशांत कुमार जैसे

कुछ नेता हैं जो पूर्ण शराबबंदी की पुनः स्थापना का नारा उठा रहे हैं। यह सवाल उठता है, अगर शराबबंदी सचमुच जनता के हित में थी, तो सत्ता पक्ष इससे डर क्यों रहा है? क्या यह स्वीकारोक्ति है कि कानून तो बनाया गया, लेकिन उसका क्रियान्वयन असफल रहा? शराबबंदी क्यों जरूरी है, उस महिला से पूछिये, जिसकी बिछुए शराब पीने से लिये उसके पति ने बेच दी। ऐसी त्रासद घटनाएं बिहार के जन-जन में देखने को मिलती है।

वैसे तो हर एक का जीवन अनेकों विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरा रहता है। हमारा हर दिन भी कई विरोधाभासों के बीच बीतता है। आज तो हमारी सारी नीतियों में, हमारे सारे निर्णयों में, हमारे व्यवहार में, हमारे कथन में विरोधाभास स्पष्ट परिलक्षित है। लेकिन बिहार चुनाव ऐसे विरोधाभास के कारण कथनी करनी के अंतर का अखाड़ा ही बनते हुए प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि हमारे जीवन में सत्य खोजने से भी नहीं मिलता। राजनेताओं एवं राजनीतिक दलों का व्यवहार दोगला हो गया है। उनके द्वारा दोहरे मापदण्ड अपनाने से हर नीति, हर निर्णय समाधानों से ज्यादा समस्याएं पैदा कर रहे हैं। चुनाव एवं चुनावी मुद्दें समस्याओं के समाधान का माध्यम बनने चाहिए, लेकिन वे समस्याओं को बढ़ाने का जरिये बनते रहे हैं। यही कारण है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, महिला-सुरक्षा, अपराध-नियंत्रण की प्राथमिकता के नारे हमारे लिए स्वप्न ही बने हुए हैं।

ये तो कुछ नमूने हैं जबकि स्वतंत्रता के 78 वर्ष बाद भी हमें अहसास नहीं हो रहा है कि हम स्वतंत्र हैं। राजनीतिक विरोधाभासों और विसंगतियों से उत्पन्न समस्याओं से हम आजाद नहीं हुए हैं। हमारे कर्णधारों के चुनावी भाषणों में आदर्शों का व्याख्यान होता है और कृत्यों में भुला दिया जाता है। सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि हम हर स्तर पर वैश्वीकरण व अपने को बाजार बना रहे हैं। अपने को, समय को पहचानने वाला साबित कर रहे हैं। पर हमने अपने आप को, अपने भारत को, अपने बिहार को, अपने पैरों के नीचे की जमीन को नहीं पहचाना। नियति भी एक विसंगति का खेल खेल रही है। पहले जेल जाने वालों को कुर्सी मिलती थी, अब कुर्सी पाने वाले जेल जा रहे हैं। यह नियति का व्यंग्य है या सबक? पहले नेता के लिए श्रद्धा से सिर झुकता था अब शर्म से सिर झुकता है। जिन्दा कौमें पांच वर्ष तक इन्तजार नहीं करतीं, हमने 15 गुना इंतजार कर लिया है। यह विरोधाभास नहीं, दुर्भाग्य है, या सहिष्णुता कहें? जिसकी भी एक सीमा होती है, जो पानी की तरह गर्म होती-होती 50 डिग्री सेल्सियस पर भाप की शक्ति बन जाती है। बिहार इस नियति से कब मुक्त होगा, यही इस चुनावों में विमर्श का सबसे बड़ा मुद्दा होना चाहिए।

बिहार की सबसे बड़ी त्रासदी बेरोजगारी है। लाखों युवाओं के पास न काम है, न अवसर। हर चुनाव में इस पर वादे किए जाते हैं, लेकिन परिणाम लगभग शून्य रहते हैं। प्रदेश के नौजवान पलायन को मजबूर हैं, मजदूरी के लिए दूसरे राज्यों का रुख करते हैं। चुनावी सभाओं में नौकरियों का झांसा तो मिलता है, लेकिन ठोस योजनाएं और नीतियां कहीं दिखाई नहीं देतीं। राजनीतिक दलों के पास न तो रोजगार सृजन की दीर्घकालिक योजना है, न शिक्षा और कौशल विकास को जोड़ने की कोई ठोस रणनीति। चुनावी भाषणों में बिहार के विकास की बातें होती हैं, लेकिन युवा भविष्य की वास्तविक चिंता कहीं नहीं झलकती। बिहार में महिला सुरक्षा, अपराध और माफिया तंत्र का प्रश्न भी उतना ही ज्वलंत है। हाल के वर्षों में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में लगातार वृद्धि हुई है। भूमि विवादों, रंगदारी और राजनीतिक संरक्षण प्राप्त अपराधियों की गतिविधियाँ अब भी जारी हैं। मगर किसी भी दल की ओर से इन पर कोई ठोस नीति या वचन नहीं दिखाई देता।

राजनीतिक दल जानते हैं कि इन विषयों पर बात करना असुविधाजनक है, क्योंकि यह सीधा शासन व्यवस्था की विफलता को उजागर करता है। इसलिए वे इन पर मौन साधे हुए हैं। अपराध और महिला सुरक्षा पर चुप्पी बताती है कि सत्ता प्राप्ति की होड़ में संवेदनशीलता की कोई जगह नहीं बची है। बिहार की राजनीति आज भी जातीय समीकरणों और तुष्टिकरण की जकड़ में फंसी हुई है। विकास और सुशासन की बातें केवल नारों तक सीमित हैं। उम्मीदवार चयन से लेकर प्रचार तक, हर जगह जातीय गणित प्राथमिकता में है। परिणाम यह है कि मुद्दे हाशिये पर चले जाते हैं और वोट बैंक की राजनीति सर्वोच्च स्थान पा लेती है। विकास के नाम पर किए गए बड़े-बड़े दावे चुनाव बीतते ही धुंधले पड़ जाते हैं। गांवों में आज भी सड़कें टूटी हैं, अस्पतालों में डॉक्टर नहीं हैं, स्कूलों में शिक्षक नहीं हैं, और प्रशासनिक तंत्र भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। ऐसे में जब राजनीतिक दल मुद्दों पर संवाद करने के बजाय केवल आरोप-प्रत्यारोप में व्यस्त हों, तो जनता का विश्वास कमजोर पड़ना स्वाभाविक है।

आज बिहार को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो चुनाव को जन-कल्याण के दृष्टिकोण से देखे, न कि केवल सत्ता प्राप्ति की दौड़ के रूप में। शराबबंदी, रोजगार, अपराध-मुक्ति, महिला सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दे बिहार राज्य की आत्मा हैं। इन्हें नजरअंदाज करना, बिहार के भविष्य को अंधेरे में धकेलने जैसा है। विकास का अर्थ केवल सड़कें और पुल नहीं, बल्कि मानव विकास है, जहां हर व्यक्ति सुरक्षित, शिक्षित, रोजगारयुक्त और सम्मानजनक जीवन जी सके। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि जनता अब केवल नारों से नहीं, परिणामों से प्रभावित होती है। बिहार चुनाव हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या राजनीति अब केवल सत्ता का खेल बनकर रह गई है? क्या लोकतंत्र का मूल उद्देश्य जनसेवा-अब खो गया है? जब जनता के असली मुद्दे, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा और सामाजिक न्याय, चुनावी भाषणों से गायब हो जाएं, तब यह लोकतंत्र के क्षरण का संकेत है।

जरूरत है कि राजनीतिक दल फिर से उन बुनियादी प्रश्नों पर लौटें, जिन पर बिहार का वर्तमान और भविष्य निर्भर करता है। यदि वे ऐसा नहीं करते, तो बिहार की जनता का यह चुनाव एक बार फिर केवल चेहरों और गठबंधनों का उत्सव बनकर रह जाएगा, जहाँ जनहित और जनसरोकार फिर से पीछे छूट जाएंगे। बिहार को नारों नहीं, नीतियों की राजनीति चाहिए और यह तभी संभव है, जब मुद्दों पर बात करने का साहस राजनीति में लौट आए।

समृद्ध का एहसास कराता है धनतेरस

अशोक भाटिया

पीओके को लेकर पाकिस्तान केवल स्थानीय नहीं भारत व अफगानिस्तान से भी हो रहा परेशान

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमिर खान मुत्तकी के भारत दौरे से पाकिस्तान इतना बौखलाया कि उसने युद्ध ही शुरू कर दिया है। जवाबी कार्रवाई में तालिबान शासन की ओर से भी मुंहतोड़ बदला लिया जा रहा है। अफगानिस्तान-पाकिस्तान दोनों ही ओर से भारी तबाही के दावे हो रहे हैं। लेकिन, इस दौरान भारत की धरती से पाकिस्तान को जो कुछ संदेश दिया गया है, उससे वह पूरी तरह से हिला हुआ नजर आ रहा है। पाकिस्तान को कहीं न कहीं डर सताने लगा है कि अबकी बार गैर-कानूनी कब्जे वाला कश्मीर (पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर-पीओके) उसके हाथों से निकल सकता है। क्योंकि, पहले भारत ही उसे चेतावनी दे रहा था, लेकिन अब अफगान तालिबान की ओर से भी इशारों में उसे एक तरह से अल्टीमेटम दे दिया गया है।

पीओके पर पाकिस्तान को अफगान तालिबान ने झटका ये दिया है कि उसने भारत की धरती से जम्मू और कश्मीर पर भारत की संप्रभुता का पूर्ण समर्थन कर दिया है। यह सब तब हुआ है, जब अफगानिस्तान और पाकिस्तान पूर्ण युद्ध के मुहाने पर खड़े हैं। भारत के साथ संयुक्त बयान में अफगानिस्तान के इस स्टैंड पर पाकिस्तान बहुत तिलमिलाया हुआ है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान से इस बात का औपरचारिक विरोध भी जताया है और इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) के कथित प्रस्ताव का उल्लंघन बताया है।

भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मुत्तकी के साथ द्विपक्षीय मुलाकात में पहले ही पीओके पर भारत की स्थिति यह कहकर साफ कर चुके हैं कि हमारे बीच 106 किलोमीटर लंबी सीमा वाखान कॉरिडोरः यह क्षेत्र अभी पाकिस्तान के गैर-कानूनी कब्जे में है और इस वजह से अफगानिस्तान, भारत का निकटवर्ती पड़ोसी है और हम अफगान के लोगों के शुभचिंतक हैं। अफगानिस्तान के विकास और प्रगति में भारत की गहरी दिलचस्पी है। इन बातों से पाकिस्तान इतना घबराया हुआ है कि इसने इस्लामाबाद में अफगानिस्तानी राजदूत को बुलाकर दोनों देशों के साझा बयान को बहुत ही ज्यादा असंवेदनशील बताने की कोशिश की है।

इसके पहले पीओके में प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच हिंसक झड़पों में तीन पुलिस अधिकारियों सहित दस लोगों की मौत हो गई और दर्जनों घायल हो गए। संघीय सरकार ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए एक वार्ता समिति भेजी थी। यह हाल ही में व्यापारियों और नागरिक समाज समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक प्रमुख संगठन पीओजेके ज्वाइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएसी) के साथ महत्वपूर्ण वार्ता के लिए मुजफ्फराबाद पहुंचा था। सामाजिक कार्यकर्ता शौकत नवाज मीर के नेतृत्व में जेएएसी द्वारा आयोजित बंद 29 सितंबर को शुरू हुआ था और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के कई जिलों को पूरी तरह से रोक दिया गया था।

सरकार ने 28 सितंबर से पूरी तरह से संचार ब्लैकआउट लगा दिया है, जिससे निवासियों के लिए मोबाइल दूरसंचार और इंटरनेट कनेक्शन बंद हो गए हैं। मुजफ्फराबाद में गुलजार बाजार बंद हैं, जबकि कोई स्ट्रीट वेंडर नहीं है। सार्वजनिक परिवहन ठप है। अराजकता ने क्षेत्र के लगभग 40 लाख निवासियों को अनिश्चितता की स्थिति में डाल दिया है। सरकार ने एक बयान में कहा, उन्होंने कहा कि अधिकारी व्यवस्था बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं और लोगों से अपील की कि वे एक विशिष्ट एजेंडे के साथ सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही दुष्प्रचार और फर्जी खबरों से प्रभावित न हों। पिछले दो वर्षों में इस क्षेत्र में यह तीसरा बड़ा आंदोलन है और समिति की 38 सूत्री मांगों को स्वीकार करने से सरकार के इनकार के कारण शुरू हुआ था।

कश्मीर घाटी एक सुंदर लेकिन विवादित हिमालयी क्षेत्र है। 1947 में स्वतंत्रता के बाद से पाकिस्तान और भारत ने कई युद्ध लड़े हैं। चीन इस क्षेत्र के उत्तरी दो हिस्सों को भी नियंत्रित करता है। भारत ने बार-बार पीओके को वापस लेने की भाषा का इस्तेमाल किया है। चीन पाकिस्तान का दोस्त है, लेकिन पाकिस्तान चीन के कब्जे वाले क्षेत्रों को छोड़कर पूरे कश्मीर पर दावा करता है। 2017 की जनगणना के अनुसार, पीओके की आबादी 40 लाख से अधिक है। कश्मीर में प्रधानमंत्री और विधानसभा के लिए अर्ध-स्वायत्तता है। वर्तमान अशांति की उत्पत्ति मई 2023 में हुई है। आसमान छूते बिजली बिलों के विरोध में क्षेत्र के नागरिक पहली बार सड़कों पर उतरे थे। आटे की भारी तस्करी और रियायती गेहूं की आपूर्ति की भारी कमी की शिकायतें मिली थीं। अगस्त 2023 तक, ये अलग-अलग शिकायतें संगठित विरोध प्रदर्शनों में बदल गई थीं। उस साल सितंबर में, सैकड़ों कार्यकर्ता मुज़फ़्फ़राबाद में एकत्र हुए और औपचारिक रूप से जेएसी का गठन किया। इसमें क्षेत्र के सभी जिलों के प्रतिनिधि शामिल थे।

विरोध प्रदर्शनों की पहली बड़ी तीव्रता मई 2024 में आई जब प्रदर्शनकारियों ने मुजफ्फराबाद के लिए एक लंबा मार्च शुरू किया, जिसमें एक पुलिस अधिकारी सहित कम से कम पांच लोग मारे गए, और हिंसक विरोध प्रदर्शन तभी रुका जब पाकिस्तान के प्रधान मंत्री शाहबाज शरीफ आटे की कीमतों और बिजली दरों में कमी जैसी प्रमुख मांगों पर सहमत हो गए। सरकार ने अनुदान के रूप में अरबों रुपये आवंटित किए, लेकिन चुप्पी लंबे समय तक नहीं रही। उसी वर्ष अगस्त में, खअअउ ने एक और लॉकडाउन की घोषणा की। जेएएसी द्वारा प्रस्तुत मांगों में 38 विशिष्ट मुद्दे शामिल हैं। इन मांगों में मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना, प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शुरू करना और प्रांतीय विधानसभाओं की संरचना को बदलना शामिल है। सूची में सबसे ऊपर शासक वर्ग के विशेषाधिकारों को समाप्त करने की मांग है, जिसे पिछली शिकायतों में भी उजागर किया गया था। जेएएसी ने कहा कि मई 2024 के विरोध प्रदर्शनों के बाद, सरकार ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों को दिए गए विशेषाधिकारों की समीक्षा के लिए एक न्यायिक आयोग की स्थापना को मंजूरी दी।

हालाँकि, नवीनतम अशांति के बाद, स्थानीय प्रशासन ने संचार काट दिया है और शैक्षणिक संस्थानों को अनिश्चितकाल के लिए बंद करने का आदेश दिया है। इससे भी अधिक विवादास्पद रूप से, उन्होंने अर्धसैनिक बलों सहित शेष पाकिस्तान से अतिरिक्त पुलिस इकाइयों को बुलाया है। लेकिन वरिष्ठ स्थानीय सरकारी अधिकारियों ने मरने वालों की संख्या 15 बताई है। जेएसी ने अर्धसैनिक बलों की तैनाती पर आपत्ति जताई है। जेएएसी नेता मीर ने इस सप्ताह की शुरूआत में संवाददाताओं से कहा था कि मुख्य भूमि पाकिस्तान से अर्धसैनिक बलों को बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि स्थानीय पुलिस पहले से ही मौजूद थी। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के वित्त मंत्री अब्दुल मजीद खान ने स्वीकार किया कि हालांकि पहले दौर की वार्ता पहले ही हो चुकी है, लेकिन एक नई समिति मुजफ्फराबाद में आई है और उसे प्रदर्शनकारियों की शिकायतों को हल करने का काम सौंपा गया है। ₹ जब उन्होंने पिछले साल विरोध करना शुरू किया, तो यह सब बिजली और आटे की कीमतों के बारे में था और हम उस पर सहमत हुए; लेकिन उन्हें यह भी समझने की जरूरत है कि चीजें रातोंरात नहीं बदल सकती हैं और इसमें समय लगता है। सरकार जेएएसी के 38 बिंदुओं में से अधिकांश पर सहमत हो गई है; लेकिन शरणार्थियों के लिए आरक्षित बारह सीटों को समाप्त करने और 'शासक वर्ग के विशेषाधिकारों' को समाप्त करने के मुद्दों पर बातचीत विफल हो गई है। मंत्री ने उपमहाद्वीप के विभाजन के दौरान हुई असुविधा की ओर इशारा करते हुए शरणार्थियों के लिए आरक्षित सीटों को समाप्त करने के पीछे के तर्क को चुनौती दी। ये वे लोग थे जिनके परिवार भारत से आए थे जहां वे जमींदार और व्यापारी थे; लेकिन वे अपनी संपत्ति पीछे छोड़ गए और अत्यधिक गरीबी में पाकिस्तान भाग गए।

जेएएसी को लगता है कि उन्हें सीटों का कोटा देना अनुचित है । मंत्री स्वयं इस क्षेत्र के अनुमानित 2.7 मिलियन लोगों में से हैं, जिनके परिवार भारत के कश्मीर से चले गए हैं।ऐसा प्रश्न उठाया गया था। सरकार के प्रतिनिधियों और जेएएसी सदस्यों के बीच बातचीत बिना किसी समाधान के समाप्त हो गई। यह तो समय ही बताएगा कि इस क्षेत्र में नाराजगी और बेचैनी कितनी जल्दी खत्म होगी। दरअसल जेकेजेएएसी पीओक की जिन 12 आरक्षित सीटों को खत्म करने की मांग कर रहे हैं। ये सीटें भारतीय जम्मू-कश्मीर से आए शरणार्थियों के लिए आरक्षित हैं। ये लोग 1947, 1965, 1971 के युद्ध या उसके बाद पीओके पहुंचे हैं। इस आरक्षण की वजह से स्थानीय आबादी का प्रतिनिधित्व कम हो जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि उनकी समस्याओं और जरूरतों को विधानसभा में उठाने के लिए और विधायक चाहिए। उनका यह भी कहना है कि रिजर्व सीटों का फायदा केवल कुछ ही परिवारों को मिल रहा है। ये सीटें 2019 में आए हाई कोर्ट के एक फैसले के बाद आरक्षित की गई हैं।

पाकिस्तान की सरकार इस प्रदर्शन से बहुत अधिक डरी हुई है। आंदोलन से निपटने के लिए इलाके में पत्रकारों के जाने पर पाबंदी लगा दी है। इसके साथ ही पोओके में इंटरनेट सेवाएं ठप कर गई है। इस प्रदर्शन को देखते हुए सरकार को डर इस बात का डर सता रहा है कि प्रदर्शनकारी कहीं आजादी की मांग न मांगने लगें। साल 2017 में हुई जनगणना के मुताबिक पीओके की आबादी करीब 40 लाख है। वहां चल रहे आंदोलन की जड़े मई 2023 में हैं, जब वहां के लोग आसमान छूती बिजली की कीमतों के विरोध में सड़क पर उतर आए थे। इस दौरान आटे की तस्करी और सब्सिडी वाले गेहूं की आपूर्ति में भारी कमी आने की खबरें भी आई थीं। अगस्त 2023 आते-आते इन प्रदर्शनों ने संगठित रूप लेना शुरू कर दिया। उस साल सितंबर में कार्यकर्ता मुजफ्फराबाद में जमा हुए और सभी जिलों के प्रतिनिधियों ने मिलकर जेकेजेएएसी का गठन किया। इस आंदोलन ने मई 2024 में उग्र हो गया। दरअसल पीओके के लोगों ने मुजफ्फराबाद की ओर कूच किया। इसके बाद उनकी सुरक्षा बलों के साथ हिंसक झड़पें हुईं। इनमें एक पुलिस अधिकारी समेत करीब पांच लोगों की मौत हो गई।यह प्रदर्शन तब स्थगित हुआ, जब प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने आटे और बिजली दरों में कटौती लाने जैसी मांगें मान लीं। पाकिस्तान की सरकार ने इसके लिए 23 अरब रुपये की सब्सिडी दी। लेकिन यह शांति बहुत टिक नहीं पाई। इस साल अगस्त में, जेकेएएसी ने फिर से आंदोलन की घोषणा कर दी।

प्रकृति की गोद में झुकती श्रद्धा, महाछठ पर्व का दिव्य आलोक

-सुरेश गांधी

छठ केवल पर्व नहीं, यह लोक-जीवन की आत्मा है। प्रकृति के सम्मान का उत्सव है छठ। यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन, पर्यावरण और आस्था की संगम स्थली है। जहां दीपावली में घर-आंगन जगमगाते हैं, वहीं छठ में आत्मा के भीतर प्रकाश फैलता है। बिहार की मिट्टी से उपजा यह महापर्व आज विश्व पटल पर अपनी आध्यात्मिक गरिमा और सांस्कृतिक पहचान के साथ प्रतिष्ठित हो चुका है। जो कभी गंगा, कोसी, सोन और सरयू के घाटों पर सीमित था, वह आज भारत ही नहीं सात समुंदर पार अपनी लौकिक उजास बिखेर रहा है। लंदन के टेम्स किनारे, दुबई की खाड़ी में, या न्यूयॉर्क के हडसन तट पर, प्रवासी भारतीय मिट्टी की सूप में गंगाजल भरकर सूर्य को अर्घ्य देते हैं, तो लगता है कि यह आस्था सीमाओं से परे एक वैश्विक संस्कृति बन चुकी है। छठ महापर्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि मानवता और प्रकृति के सहअस्तित्व की जीवंत अभिव्यक्ति है। सूर्य, जो प्रत्यक्ष देवता हैं, उनके प्रति यह धन्यवाद पर्व है। उनकी ऊर्जा से ही तो धरती पर अन्न उपजता है, जल का चक्र चलता है और जीवन की नाड़ी स्पंदित रहती है।

छठ पर्व केवल आस्था नहीं, जीवन का दर्शन है। यह हमें सिखाता है कि संयम ही सबसे बड़ा उत्सव है, स्वच्छता ही सबसे बड़ी साधना है, और कृतज्ञता ही सबसे बड़ा धर्म। छठ हमें याद दिलाता है कि जब मनुष्य प्रकृति के प्रति विनम्र होता है, तभी उसका अस्तित्व सुरक्षित रहता है। यह पर्व सिखाता है जीवन का सार पूजा में नहीं, प्रकृति के प्रति आभार में है। छठ पर्व में वह शक्ति है जो समाज को जोड़ती है, परिवारों को मिलाती है, और मनुष्यता को ऊँचा उठाती है। यह पर्व हमें यह एहसास कराता है कि सूर्य की तरह ही हमें भी सबको प्रकाश देना चाहिए, बिना भेदभाव, बिना अपेक्षा। सचमुच, छठ केवल व्रत नहीं, यह प्रकृति, श्रद्धा और विज्ञान का अद्भुत समागम है। यह मनुष्य और सृष्टि के बीच पुल है, जहाँ हर अर्घ्य में आभार है, हर दीप में प्रेम, और हर सूर्य में जीवन का संदेश। छठ केवल व्रत नहीं, यह पृथ्वी को बचाने का संकल्प है।

चार दिनों की तपस्या, शरीर, मन और आत्मा की साधना

छठ पर्व चार दिनों का है, और इन चार दिनों में जीवन की समग्र साधना छिपी है।

पहला दिन नहाय-खाय (25 अक्टूबर): इस दिन व्रती नदियों में स्नान करते हैं और पवित्र भोजन ग्रहण करते हैं। लौकी, चने की दाल, और कद्दू की सब्जी के साथ बिना लहसुन-प्याज का भात कृ यह भोजन शरीर को शुद्धता की साधना के लिए तैयार करता है। यह केवल खाना नहीं, संयम का संस्कार है।

दूसरा दिन खरना (26 अक्टूबर): संध्या समय गुड़ की खीर और रोटी का प्रसाद बनता है। व्रती इस प्रसाद को पहले छठी मैया को अर्पित करते हैं, फिर ग्रहण करते हैं। इसके बाद 36 घंटे का निर्जला उपवास प्रारंभ होता है। यह व्रत केवल भूखा रहना नहीं कृ मन की समस्त कामनाओं का दमन है।

तीसरा दिन संध्या अर्घ्य (27 अक्टूबर): सूर्यास्त के समय घाटों पर दीपों की पंक्तियां जगमगाती हैं। व्रती महिलाएं कमर तक जल में डूबकर डूबते सूर्य को अर्घ्य देती हैं, यह उस ऊर्जा के प्रति कृतज्ञता है जिसने दिन भर संसार को आलोकित किया।

चैथा दिन उषा अर्घ्य (28 अक्टूबर): प्रातःकाल उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रती पारण करती हैं। यह नई शुरूआत का प्रतीक है, अंधकार से प्रकाश, निराशा से आशा, मृत्यु से जीवन की यात्रा। यही तो छठ का दार्शनिक अर्थ है, संध्या और उषा के संग मिलकर मनुष्य अपने भीतर के सूर्य को जागृत करता है।

लोकगीतों में बहती श्रद्धा की सरिता

छठ के गीतों में न केवल लोकधुन है, बल्कि लोकसंस्कार का संगीत भी। हर घर, हर घाट पर गूंजता है,

केलवा जे फरेला घवद से ओ धनुसरा...

उग हो सूर्य देव भइली अरघ के बेर...

इन गीतों में मां-बहनों की ममता, दुलार, आस्था और पर्यावरण का संदेश एक साथ बहता है। लोकसंगीत की यह परंपरा न केवल धार्मिक अनुष्ठान है बल्कि सांस्कृतिक उत्तराधिकार भी। छठ के गीत पीढ़ियों के बीच सेतु हैं, जहां नयी पीढ़ी पुरानी परंपरा को महसूस करती है। हर घाट, हर तालाब पर लोगों की श्रद्धा का सागर उमड़ता है। यह पर्व जाति, वर्ग और भाषा की सीमाओं से परे जाकर सबको जोड़ता है। बेटियां मायके आती हैं, दामाद स्वागत करते हैं, घर में अपनत्व और स्नेह का अनोखा वात्सल्य छा जाता है। यही तो भारतीय संस्कृति का सौंदर्य है कृ जहाँ पर्व सिर्फ पूजा नहीं, परिवार का पुनर्मिलन भी होते हैं।

जब पूर्व दिशा के क्षितिज पर अरुणिमा फैलती है, और सूर्यदेव के प्रथम किरणें जल में थिरकती हैं, तब लगता है मानो सृष्टि स्वयं अपने आराध्य को प्रणाम कर रही हो। घाटों पर डूबते और उगते सूरज को अर्घ्य देती व्रती महिलाओं की सादगी और श्रद्धा में जो सौंदर्य है, वह केवल धार्मिक नहीं, आध्यात्मिक और पारिस्थितिक दोनों है। यही तो है छठ, प्रकृति के सम्मान का उत्सव, शुद्धता की साधना और लोकभावना का महाकाव्य। छठ, आस्था का वह अद्भुत संगम है जहां प्रकृति, मनुष्य और ईश्वर तीनों एक सूत्र में बंध जाते हैं। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और शरीर-मन की शुद्धि का संदेश भी देता है। छठ पर्व कहता है ह्लस्वच्छ रहो, संयमी बनो, प्रकृति का सम्मान करो और भीतर का सूर्य जगाओ। मतलब साफ है छठ महापर्व केवल लोक आस्था का नहीं, बल्कि मानवता और प्रकृति के बीच संवाद का पर्व है। जब जल में डूबकर सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है, तब सृष्टि और साधक, दोनों एक हो जाते हैं

प्रकृति की प्रतिष्ठाः धर्म और विज्ञान का संगम

छठ केवल पूजा नहीं, प्रकृति का पर्यावरणीय अनुबंध है। सूर्य को अर्घ्य देने की प्रक्रिया में छिपा है गहन वैज्ञानिक सत्य। प्रिज्म सिद्धांत के अनुसार, जब सूर्य की किरणें जल पर पड़ती हैं तो वे सात रंगों में विभाजित होती हैं। इन रंगों की तरंगें शरीर के स्नायुतंत्र और मस्तिष्क पर प्रभाव डालती हैं, जिससे मानसिक शांति, स्थिरता और ऊर्जावान चेतना प्राप्त होती है। साथ ही यह विटामिन-डी का प्राकृतिक स्रोत भी है, जो हड्डियों, मांसपेशियों और रोग प्रतिरोधक क्षमता को सशक्त करता है। पानी में खड़े होकर अर्घ्य देने से शरीर का टॉक्सिफिकेशन होता है, जो आधुनिक चिकित्सा की दृष्टि से नेचुरल डिटॉक्स थेरपी के समान है। इस प्रकार छठ एक ऐसा अनुष्ठान है जहाँ धर्म, विज्ञान और स्वास्थ्य तीनों एक साथ जुड़ते हैं। यह मनुष्य को प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने का सबसे सुंदर माध्यम है।

छठ मैयाः मातृत्व और ममता की देवी

छठ मैया को षष्ठी देवी कहा गया है, जो ब्रह्मा जी की मानस पुत्री और सूर्य देव की बहन मानी जाती हैं। वे संतान सुख की दायिनी और मातृत्व की रक्षिका हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, राजा प्रियव्रत और रानी मालिनी ने संतान की प्राप्ति के लिए इनकी आराधना की थी, और छठी मैया के आशीर्वाद से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। छठ मैया का स्वरूप अद्भुत है, वे धरणी की धीरज, गंगा की निर्मलता और मातृत्व की करुणा का प्रतीक हैं। उनकी पूजा में कोई आडंबर नहीं, सादगी ही उनकी आराधना है। मिट्टी की सूप, बाँस की टोकरी, केले का पत्ता, और गन्ने का डंडा, यही उनके पूजन का भव्य वैभव है।

पर्यावरण चेतना का पर्व

छठ उस समय की स्मृति है जब मानव और प्रकृति के बीच संबंध सहज था। यह हमें याद दिलाता है कि प्रकृति की सेवा ही पूजा है। घाटों की सफाई, नदियों की पवित्रता और पर्यावरण की शुद्धता, ये सभी इस पर्व के अभिन्न अंग हैं। छठ की तैयारी में गाँव-शहर हर जगह सामूहिकता का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। लोग मिलकर घाटों की सफाई करते हैं, जलाशयों को सजाते हैं, पौधों को नष्ट नहीं करते, बल्कि पूजन सामग्री में प्राकृतिक तत्वों का ही प्रयोग करते हैं। आज जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्रकृति पर संकट मंडरा रहा है, छठ हमें सिखाता है कि स्वच्छता और शुद्धता ही पर्यावरण की रक्षा का प्रथम सूत्र है।

प्रसाद में छिपा है स्वास्थ्य का विज्ञान

छठ का प्रसाद स्वयं में आयुर्वेदिक औषधि है। ठेकुआः गेहूँ के आटे, गुड़ और घी से बना, कैल्शियम और आयरन का प्राकृतिक स्रोत है। गन्ने का रस और गुड़ से बनी खीर शरीर में ग्लूकोज की कमी पूरी करती है। लौकी, मूली, अदरक, केले, नारियल, ये सभी प्रसाद सामग्री विटामिन और मिनरल्स से भरपूर हैं। यह व्रत न केवल आत्मसंयम सिखाता है बल्कि शरीर को विषम मौसम में अनुकूल बनाए रखने का उपाय भी देता है। कह सकते हैं, छठ का प्रसाद सांस्कृतिक आयुर्वेद है, जो न केवल स्वाद देता है, बल्कि स्वास्थ्य भी।

सूर्यः जीवन का शाश्वत स्रोत

छठ पर्व हमें सूर्य की अनिवार्यता का स्मरण कराता है। फोटोसिंथेसिस की प्रक्रिया से लेकर मानव शरीर की हर कोशिका तक, सूर्य ऊर्जा का प्रवाह ही जीवन का आधार है। बिना सूर्य के न तो पेड़-पौधे हरे रह सकते हैं, न जीव-जंतु जीवित। छठ में जब व्रती महिलाएँ जल में खड़ी होकर सूर्य को अर्घ्य देती हैं, तो वह केवल देवता की नहीं, बल्कि जीवन के स्रोत की उपासना करती हैं। सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं, जो देखे भी जाते हैं और महसूस भी।

सामूहिकता, संस्कृति और स्नेह का संगम

छठ पर्व की एक और विशेषता है, उसकी सामूहिकता। यह पर्व न किसी एक जाति का है, न किसी एक वर्ग का। यह सबका पर्व है, गाँव का, शहर का, अमीर का, गरीब का, और हर उस व्यक्ति का जो जीवन में शुद्धता चाहता है। छठ के दिनों में बेटियाँ अपने मायके आती हैं, दामादों का स्वागत होता है, परिवार का पुनर्मिलन होता है। यह पर्व रिश्तों की गरिमा और घरों की गर्माहट को फिर से जीवित कर देता है। जहाँ दीपावली में रोशनी बाहर जगमगाती है, वहाँ छठ में प्रेम की रोशनी भीतर जगती है।

विश्व पटल पर छठ का विस्तार

आज छठ केवल बिहार या पूर्वांचल का पर्व नहीं रहा। यह विश्व भर में बसे भारतीयों की पहचान बन चुका है। अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, मॉरिशस, नेपाल, फिजी, और खाड़ी देशों में अब छठ घाट बनाए जाते हैं। प्रवासी भारतीय अपनी मिट्टी की खुशबू और आस्था को विदेशों तक ले गए हैं। यह बताता है कि भारतीय संस्कृति कहीं भी जाए, अपने संस्कारों की जड़ें साथ लेकर चलती है।

छठः जीवन दर्शन की ज्योति

छठ सूयोर्पासना का पर्व है। सनातन मान्यता है कि सूर्य ही जीवन का आधार हैं। उनके बिना पृथ्वी पर न तो अन्न उपज सकता है, न जीवन टिक सकता है। सूर्य की किरणें शरीर को विटामिन-डी प्रदान करती हैं, मनोबल को ऊँचा करती हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं। यही कारण है कि यह पर्व वर्ष के उस समय मनाया जाता है जब सूर्य की ऊष्मा और पराबैंगनी किरणों का प्रभाव पृथ्वी पर संतुलित होता है। इस दृष्टि से छठ पूजा वैज्ञानिक दृष्टि से भी पूर्णतः तर्कसंगत है। छठ पर्व हमारी संस्कृति का वह उज्ज्वल अध्याय है जो बताता है कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। यह पर्व प्रकृति के प्रति आभार, मातृत्व की ममता और समाज की सामूहिकता का उत्सव है। निस्संदेह कहा जा सकता है, छठ महापर्व नहीं, प्रकृति और मानवता के सहअस्तित्व का अनुष्ठान है।

शिक्षक राम आसरे केवट के निधन पर शोक सभा संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। मंगलवार को बिंद समाज विकास संघ सहित सैकड़ो संख्या में समाजसेवी मित्रगण एवं सगे संबंधियों ने शिक्षक राम आसरे केवट के निधन पर गहरा शोक व्याप्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। मुंबई महानगर के चेंबूर शहर में रहने वाले वरिष्ठ समाजसेवी सेवानिवृत्ति उत्कृष्ट शिक्षक राम आसरे केवट ने लायंस क्लब हॉस्पिटल सायन मुंबई में इलाज के दौरान अंतिम सांस लेते हुए सभी को अलविदा कह दिया। राम आसरे केवट मूलतः जनपद जौनपुर गांव फूलपुर के निवासी थे। 1990 के दशक में बृहन्मुंबई महानगरपालिका हिंदी विद्यालय में शिक्षक के रूप में 28 वर्ष सेवा देकर सेवानिवृत हुए थे। तत्पश्चात समाजसेवी के रूप में सराहनीय कार्य किये। विगत दो वर्षों से स्वास्थ्य बराबर नहीं चल रहा था। उन्होंने अपने पीछे ,बेटे मनोज कुमार केवट, सरोज कुमार केवट, बेटे बेटी बहु नाती से भरा पूरा परिवार सहित समाज सेवियों के दिलो में प्यार दुलार सम्मान का प्रेरणा श्रोत, का दिशा निर्देश दे गए। बिंद समाज विकास संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ शेषधर बिंद ने परिवार को सांत्वना देते हुए कहा धैर्य रखें विधि के विधान के आगे किसी का नहीं चलता। अध्यक्ष ने कहा महानगर में हम सभी दुखद समाचार सुनकर दुख के सहभागी हैं , और मृत शरीर के लिए चढ़ावा लाना भूल जाते हैं। ऐसे में हम सभी प्रण लेते हैं कि कुछ ना कुछ अंशदान देकर पीड़ित के परिवार का सहयोग करें। उपस्थित सभी समाजसेवियों एवं संबंधियों ने दो शब्द रखते हुए 2 मिनट का मौन धारण रखकर स्मृति शेष आत्मा को शांति प्रदान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

एअर इंडिया का नेवार्क जाने वाला विमान तकनीकी खराबी के कारण मुंबई लौटा

मुंबई। एअर इंडिया का नेवार्क जाने वाला एक विमान मंगलवार देर रात तकनीकी खराबी के कारण मुंबई लौट आया। उड़ानों पर निगरानी रखने वाली वेबसाइट फ्लाइटरडार24 डॉट कॉम पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, मंगलवार देर रात एक बजकर 50 मिनट पर नेवार्क के लिए उड़ान भरने वाला बोइंग 777 विमान तीन घंटे से ज्यादा समय तक हवा में रहने के बाद मुंबई लौट आया। विमानन कंपनी ने एक बयान में बताया, 22 अक्टूबर (21 अक्टूबर देर रात एक बजकर 50 मिनट पर) को मुंबई से नेवार्क के लिए उड़ान भरने वाले एआई191 के चालक दल ने संदिग्ध तकनीकी खराबी के कारण एहतियातन मुंबई वापसी की। विमान सुरक्षित रूप से मुंबई में वापस उतर गया और उसकी आवश्यक जांच की जा रही है। एअर इंडिया ने बताया कि उड़ान संख्या एआई191 और एआई144 (जो नेवार्क से मुंबई के लिए निर्धारित थीं) रद्द कर दी गईं। विमानन कंपनी ने बताया कि सभी प्रभावित यात्रियों के लिए मुंबई के होटल में ठहरने की व्यवस्था की गई है और उनके गंतव्य के लिए एअर इंडिया व अन्य विमानन कंपनियों की वैकल्पिक उड़ानों में बुकिंग की गई है। यात्रियों की संख्या के बारे में खुलासा नहीं किया गया। विमानन कंपनी ने बताया कि नेवार्क से एआई144 के यात्रियों को भी उड़ान रद्द किये जाने की सूचना दे दी गई है और उन्हें जल्द से जल्द वैकल्पिक व्यवस्था मुहैया कराने में मदद की जा रही है।

मुंबई में आवासीय इमारत का एक हिस्सा गिरा, दो वरिष्ठ नागरिक घायल

मुंबई। दक्षिण मुंबई में बुधवार सुबह एक आवासीय इमारत का एक हिस्सा ढह जाने से दो बुजुर्ग व्यक्ति घायल हो गए। नगर निकाय के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह घटना चिरा बाजार इलाके में जे एस एस रोड पर आत्माराम बिल्डिंग में हुई और इसकी सूचना सुबह 6.23 बजे दमकल विभाग को दी गई।

एक अधिकारी ने बताया कि पहली मंजिल पर स्थित एक घर में रसोई का एक हिस्सा गिरकर भूतल पर आ गिरा। इस हादसे में दो निवासी ठक्करजी गाला (75) और गुणवंती गाला (71) घायल हो गए।

अधिकारी ने बताया कि गुणवंती गाला को भाटिया अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। बचाव कार्य और सहायता के लिए अग्निशमन विभाग, पुलिस, नगर निकाय के कर्मचारी और महाराष्ट्र आवास एवं क्षेत्र विकास प्राधिकरण (म्हाडा) के अधिकारियों को तैनात किया गया।

महाराष्ट्र की लोक परंपरा दिवाली पहाट का भव्य आयोजन

कल्याण (उत्तरशक्ति)। कल्याण पूर्व के विनायक कॉलोनी , कैलाश नगर , नेहरू नगर , खड़ेगोलीवली गांव , मंगेशी उद्यान परिसर , विभाग में पहली बार महाराष्ट्र की लोक परंपरा दिवाली पहाट का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन शिवसेना पक्ष के माध्यम से किया गया था, जिसमें क्षेत्र के गणमान्य नागरिक और स्थानीय लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रुप में महेश गायकवाड़ और अण्णा रोकड़े उपस्थित थे। इसके अलावा आयोजक के रूप में महादेव रायभोले (पूर्व नगरसेवक तथा सभापति) सदानंद (बाबा) तिवारी (संस्थापक/अध्यक्ष कमलादेवी शिक्षण संस्था) प्रकाश तरे (पूर्व नगरसेवक तथा गटनेता) और मधुर म्हात्रे (एसईओ) गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इस दिवाली कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया, जिन्होंने दीपावली पहाट की इस अनोखी पहल का स्वागत किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्रसिद्ध गायक मधुर शिंदे और उनकी टीम थे, जिन्होंने अपनी मधुर आवाज में भजन और गीत प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मधुर शिंदे , सार्थक खैरनार , रुपाली पाटिल , नाजिर और उनकी टीम ने अपनी कला के माध्यम से आज की भोर को सुनहरी बना दिया और लोगों के दीपावली त्यौहार को और भी आनंदमयी बना दिया। कार्यक्रम का आयोजन इतना शानदार था कि सभी उपस्थित लोगों ने इसकी प्रशंसा की। कमलादेवी शिक्षण संस्था के संस्थापक/अध्यक्ष सदानंद (बाबा) तिवारी ने सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का समापन दीपावली की शुभकामनाओं के साथ हुआ, और सभी ने एक दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इस आयोजन ने दिखाया कि कैसे समुदाय एक साथ मिलकर त्योहारों का आनंद ले सकता है और सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रख सकता है।

महाराष्ट्र के बाढ़ पीड़ितों के लिए संजय सिंह ने की 2 लाख रुपए की मदद

मुंबई (उत्तरशक्ति)। महाराष्ट्र में पिछले दिनों आई भीषण बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए लोग लगातार आगे आ रहे हैं। उत्तर भारतीय संघ के उपाध्यक्ष, उद्योगपति तथा समाजसेवी संजय कमला शंभूनाथ सिंह ने कल मुख्यमंत्री निवास, वर्षा बंगले पर जाकर देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात की और दो लाख रुपए की निधि चेक द्वारा मुख्यमंत्री सहायता कोष में भेंट की। महाराष्ट्र के अभूतपूर्व विकास के लिए मुख्यमंत्री को बधाई तथा दीपावली की शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने इस योगदान के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

उत्तम कुमार ने किन्नर को दिया साडी व मिठाई

वसई रोड (उत्तरशक्ति)। वसई रोड भाजपा जनसंपर्क कार्यालय विशालनगर में किन्नर समाज को दीपावली पर साड़ी और मिठाई वितरण कार्यक्रम भाजपा केरळ के प्रमुख उत्तम कुमार द्वारा किया गया। जिसमे बाळा सावंत, प्रणित कॉपीकर और उत्तरशक्ती डेली न्यूज पेपर के संवाददाता नरेंद्र सोनी उपस्थिती रहे। किन्नर ने सभी आशीर्वाद दिया।

सफाई कर्मचारियों की ईमानदारी, कचरे में गलती से आया सोने का हार महिला को किया वापस

सफाई कर्मचारियों की ईमानदारी की हो रही है सराहना

कल्याण (उत्तरशक्ति)। एक ओर जहां सोने की कीमतें दिन-ब-दिन नए उच्चांक छू रही हैं, वहीं दूसरी ओर कल्याण पूर्व में एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसमें कचरे की पोटली में गलती से कचरे के साथ सोने का हार भी फेंक दिया गया। लेकिन सफाई कर्मचारियों ने उस कीमती सोने के हार के लालच में पड़े बिना, वह हार संबंधित महिला को वापस लौटा दिया है। केडीएमसी और सुमित कंपनी के सफाई कर्मचारियों द्वारा दिखाई गई इस ईमानदारी की हर स्तर पर सराहना की जा रही है। केडीएमसी की सुमित कंपनी के सफाई कर्मचारी हमेशा की तरह आज सुबह भी कल्याण पूर्व के विभिन्न इलाकों से कचरा एकत्र करने का काम कर रहे थे। कल्याण पूर्व की इमारतों और झोपड़पट्टियों से जमा किया गया सारा कचरा कचोरे टेकड़ी के इंटरकटिंग केंद्र पर भेजा जा रहा था। इसी दौरान सुबह कचरा लेने आए सफाई कर्मचारियों को कचरा देते समय एक महिला की नजरचूक से उसका सोने का हार भी कचरे में चला गया – ऐसी शिकायत सुमित कंपनी के 4जे प्रभाग अधिकारी समीर खाडे को केडीएमसी के स्वच्छता निरीक्षक अमित भालेराव के माध्यम से प्राप्त हुई।

इस पर समीर खाडे ने तुरंत उस स्थान पर कचरा एकत्र करने वाले संबंधित सफाई कर्मचारियों को सोने के हार की जानकारी दी। उन्होंने तुरंत कचरा एकत्र करने वाली गाड़ी को कचोरे टेकड़ी स्थित इंटरकटिंग केंद्र की ओर भेजने का निर्देश दिया। साथ ही, हार खोने वाली महिला को भी इंटरकटिंग पॉइंट पर बुलाया गया। वहां गाड़ी में एकत्र किया गया सारा कचरा संबंधित महिला, उसके परिवारजनों, पड़ोसियों और सुमित कंपनी के अधिकारियों की मौजूदगी में अलग किया गया। इसी प्रक्रिया में उस महिला का गलती से फेंका गया सोने का हार सफलतापूर्वक ढूंढ लिया गया और उसे वापस सौंप दिया गया – यह जानकारी सुमित कंपनी के अधिकारी समीर खाडे ने दी।

केडीएमसी और सुमित कंपनी के सफाई कर्मचारियों द्वारा दिखाई गई इस ईमानदारी की उस महिला सहित सभी लोगों ने सराहना की है। महिला को जब उसका महंगा सोने का हार सुरक्षित वापस मिला, तो उसके चेहरे पर खुशी का ठिकाना नहीं था।

राजस्थानी समाज की संस्थाओं द्वारा दीपावली स्नेह मिलन संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। राजस्थानी समाज की प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा दीपावली स्नेह सम्मेलन का आयोजन लक्षधाम हाईस्कूल हॉल, गोकुलधाम, गोरेगांव पूर्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। देवकीनंदन जिंदल,सुरेश भगेरिया, रमाकांत टिबडेवाला, डॉ अनील काशीप्रसाद मुरारका , जगदीश गुप्ता (जे.कुमार इन्फ्रा.) , कार्यक्रम का शुभारंभ राज दीदी, श्यामसुंदर पंसारी, सुरेश खंडेलिया , जयकुमार गुप्ता, अनिल कैंया, बंकेश अग्रवाल, कृष्णकुमार झुनझुनवाला , डॉ. राजेन्द्र अग्रवाल , डालचंद गुप्ता, विजय केडिया, ओमप्रकाश चमडिया , विरेन्द्र याज्ञनिक, प्रदीप पंसारी , श्रीराम शर्मा , शिवकान्त खेतान ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आयोजक राजस्थानी मंडल गोकुलधाम यशोधाम संस्था के संस्थापक तथा मानद सचिव राजेंद्र तुलस्यान दूर-दूर से आए हुए आगंतुकों का स्वागत एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्था के लिए गौरव की बात है कि मुंबई में एक मात्र यह ऐसा सम्मेलन है, जिसमें सभी राजस्थानी समाज के लोग शामिल होते हैं।

उपस्थित लोगों को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि दीपक के प्रकाश की तरह आप सभी अपने कार्यों से समाज में आलोकित रहे और देश के विकास में अपना योगदान दें।

वाड़ा तालुका में भाजपा को नई ताकतः सरपंच, उपसरपंच और कई कार्यकर्ता शामिल

वाड़ा। हेमंत सांवरा जनसंपर्क कार्यालयः वाड़ा तालुका के मंडा वेवघर ग्राम पंचायत के पूर्व उपसरपंच पंढरीनाथ सुतार, संदीप पाटिल, सानिका पाटिल तथा उत्साही युवा कार्यकताओं विशाल दुकले, प्रशांत दुकले, मिलिंद दुकले, आकाश दुकले, सूरज दुकले, कैलास दुकले और रोशन गिरहाणे ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में विधिवत प्रवेश किया।

सांसद जनसंपर्क कार्यालय, वाड़ा में आयोजित कार्यक्रम में इन सभी ने भाजपा की विचारधारा और नेतृत्व में अपनी आस्था जताई। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता बाबाजी कथोले सर, राजू दलवी, कंछड़ मंडल अध्यक्ष संदीप गोवारी, नीलेश पाटिल और ज्ञानेश्वर दलवी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

भाजपा में इन नए चेहरों के शामिल होने से वाड़ा तालुका में पार्टी संगठन को नई ऊर्जा, नया उत्साह और जनता की सेवा के लिए एक सशक्त सहयोग प्राप्त हुआ है। स्थानीय स्तर पर इसे पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

दीपावली व छठ की शुभकामनाओं के साथ रंजू झा ने किया एनडीए की जीत का दावा

मुंबई (उत्तरशक्ति)। भारतीय जनता पार्टी महाराष्ट्र प्रदेश महिला मोर्चा की सचिव श्रीमती रंजू झा ने समस्त देशवासियों को दीपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही उन्होंने आगामी बिहार विधानसभा उपचुनाव को लेकर एनडीए की मजबूती और जीत का भरोसा जताया है। श्रीमती झा ने कहा कि बिहार का सबसे बड़ा पर्व छठ महापर्व तो है ही, लेकिन इस बार चुनाव भी एक बड़े उत्सव की तरह पूरे जोश में चल रहा है। राष्ट्रीय स्तर के तमाम दिग्गज नेता बिहार में प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं। इस बार दरभंगा की अलीगढ़ सीट पर खास नजरें टिकी हैं, जहां से मिथिला की लोकप्रिय गायिका मैथिली ठाकुर ने नामांकन भरा है। विरोध के बावजूद उन्हें जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। वहीं दूसरी ओर महाराजगंज सीट से 25 वर्षीय युवा नीतीश द्विवेदी ने भी वीआईपी पार्टी (मुकेश साहनी के नेतृत्व में) से चुनावी मैदान में कदम रखा है। ये दोनों युवा उम्मीदवार इस चुनाव में नया उत्साह और ऊर्जा ला रहे हैं। श्रीमती रंजू झा ने बताया कि महाराष्ट्र भाजपा महिला मोर्चा की एक टोली भी बिहार रवाना होने वाली है, जो 40 से 50 कार्यकताओं के साथ विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में एनडीए प्रत्याशियों के पक्ष में प्रचार करेगी। उन्होंने विश्वास जताया कि छठ मैया का आशीर्वाद जरूर भाजपा और एनडीए के प्रत्याशियों को मिलेगा और एक बार फिर बिहार में एनडीए की सरकार बनेगी। उन्होंने नारा देते हुए कहाः फिर एक बार, एनडीए सरकार जनता को मिलेगी अच्छी सरकार।

शनिवारवाड़ा में नमाज-गोमूत्र विवाद पर सीएम फडणवीस का कड़ा संदेशः उल्लंघन पर एक्शन तय

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पुणे के शनिवारवाड़ा किले को लेकर उठे विवाद पर बात करते हुए सभी नियमों और विनियमों का सख्ती से पालन करने का आग्रह किया। उन्होंने चेतावनी दी कि कानूनों का उल्लंघन करने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। विवाद तब शुरू हुआ जब शनिवारवाड़ा में तीन महिलाओं ने नमाज अदा की, जिस पर भाजपा सांसद मेधा कुलकर्णी ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसके बाद कुलकर्णी और पार्टी कार्यकताओं ने उस जगह का गोमूत्र से 'शुद्धिकरण' किया, जिससे विभिन्न राजनीतिक दलों में गरमागरम बहस छिड़ गई।

कुलकर्णी ने अपने कृत्य का बचाव किया और नमाज अदा करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए कहा कि शनिवारवाड़ा में ऐसी धार्मिक गतिविधियाँ नहीं होनी चाहिए। कुलकर्णी के कृत्य को भाजपा के कुछ हिस्सों में समर्थन मिला, लेकिन एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) सहित भाजपा के सहयोगी दलों ने उनकी आलोचना की। शिवसेना की नीलम गोरहे ने जोर देकर कहा कि चूँकि शनिवारवाड़ा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अंतर्गत एक संरक्षित स्थल है, इसलिए कानून लागू होना चाहिए। एनसीपी नेता रूपाली पाटिल थोम्ब्रे ने सांप्रदायिक तनाव भड़काने के लिए कुलकर्णी के खिलाफ मामला दर्ज करने की माँग की।

घटना के बाद, एएसआई ने धरोहर स्थल पर उल्लंघनों की जाँच के लिए मामला दर्ज किया। पुणे पुलिस ने कहा है कि वे आगे की कार्रवाई करने से पहले एएसआई से परामर्श करेंगे। पुलिस उपायुक्त कृषिकेश रावले ने आश्वासन दिया कि मामले को गंभीरता से लिया जा रहा है और तदनुसार कार्रवाई की जाएगी। शनिवारवाड़ा, पेशवाओं द्वारा 1736 में निर्मित 13 मंजिला महल, पुणे में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व रखता है। हालाँकि 1828 में आग लगने से इसका अधिकांश भाग नष्ट हो गया था, फिर भी इसकी किले की दीवारें और विशाल द्वार पुणे की समृद्ध विरासत के प्रतीक हैं, जिससे इसका संरक्षण प्राथमिकता बन गया है।

मुंबई की एक आवासीय इमारत में आग लगी, दमकलकर्मी समेत दो लोग मामूली रूप से घायल

मुंबई। मुंबई के मलाड पश्चिम में बुधवार को एक आवासीय इमारत में आग लग गई, जिसमें एक निवासी और एक अग्निशमनकर्मी घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

नगर निगम के एक अधिकारी ने बताया कि अग्निशमन विभाग को सुबह 5:06 बजे लिंक रोड स्थित इनऑर्बिट मॉल के पास सात मंजिला भूमि क्लासिक में आग लगने की सूचना मिली। उन्होंने बताया कि आग इमारत की छठी और सातवीं मंजिल पर स्थित कई बंद फ्लैटों तक फैल गई थी।

अधिकारी ने बताया कि कई दमकल गाड़ियां मौके पर भेजी गईं और लगभग दो घंटे बाद आग पर काबू पा लिया गया। उन्होंने बताया कि घटना में शुभम अगोटरिया (24) मामूली रूप से घायल हो गए। अग्निशमन अभियान के दौरान मामूली चोट लगने के बाद एक वरिष्ठ स्टेशन अधिकारी को जोगेश्वरी (पूर्व) स्थित बालासाहेब ठाकरे ट्रॉमा केयर अस्पताल ले जाया गया। अधिकारी ने बताया कि आग लगने का सही कारण अभी पता नहीं चल पाया है।

अधिकारी ने बताया कि बोरीवली पूर्व के गोराई इलाके में दोपहर के आसपास एक रिहायशी इमारत में भी आग लग गई। उन्होंने कहा, किसी के घायल होने की कोई खबर नहीं है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय :
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

गोवर्धन पूजा के अवसर पर जिलाधिकारी ने किया गौशाला का भ्रमण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। तहसील शाहगंज के ग्राम सीधाई में गोवर्धन पूजा के शुभ अवसर पर जिलाधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र द्वारा ग्राम सीधाई स्थित गौशाला का भ्रमण किया गया, जहाँ उन्होंने विधिवत रूप से गौ माता की पूजा-अर्चना की तथा उन्हें गुड़, केला और हरा चारा का भोग अर्पित किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने गौशाला में सेवा दे रहे कार्मिकों और सफाई कर्मियों को अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने सभी को उनके सेवा कार्यों के लिए साधुवाद भी दिया।

जिलाधिकारी ने गो आश्रय स्थल में व्यवस्थाओं को देखते हुए कहा कि गोवर्धन पूजा के उपलक्ष्य में जनपद के समस्त गौशालाओं में गोपूजन कार्यक्रम किया जा रहा है। इस दौरान उन्होंने गोवंश संरक्षण और गोसंवर्धन के प्रति जागरूक भी किया। गो पूजन कार्यक्रम के पश्चात जिलाधिकारी ने उपस्थित बच्चों को चॉकलेट वितरित कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर ग्रामीणजन, स्थानीय प्रशासनिक अधिकारीगण एवं बच्चे सहित अन्य उपस्थित रहे। इसके साथ ही अन्य गो आश्रय स्थलों में भी गोपूजन कार्यक्रम नामित नोडल अधिकारियों की देखरेख में संपन्न हुआ।

लापरवाही या गलतफहमी! नवजात की मौत पर उठा विवाद, दोनों पक्षों के बयान आए सामने

जिंदा हालत में बच्चे को किया गया था रेफर, परिजनों की लापरवाही से गयी जान-डॉ. महफूज

शाहगंज,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर के एक निजी अस्पताल के डॉक्टर एक डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप लगाते एक नवजात की मौत का जिम्मेदार बताया गया। और इसकी शिकायत जिलाधिकारी जौनपुर से भी गयी है। जानकारी आजमगढ़ जनपद के फूलपुर थाना क्षेत्र के ग्राम शेखपुर पिपरी की रहने वाली किरन यादव, पुत्री लालमन यादव, ने नगर के आजमगढ़ रोड स्थित चाइल्ड केयर हास्पिटल के डॉ. महफूज पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि डॉक्टर ने उनके भतीजे को गलत इंजेक्शन लगाकर उसकी जान ले ली।

किरन यादव ने जिलाधिकारी जौनपुर मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को प्रार्थना पत्र देकर मामले में कठोर दंडात्मक कार्रवाई की मांग की है। किरन यादव की बहन प्रियंका यादव

ने बीते 17 अक्तूबर 2025 को सरकारी अस्पताल फूलपुर (आजमगढ़) में एक बच्चे को जन्म दिया था।

परिवारजन बच्चे को यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसने जन्म के दौरान कचरा (म्यूकस) न पी लिया हो इस शंका को दूर करने के लिए नगर के आजमगढ़ रोड स्थित डॉ. महफूज के अस्पताल पर लेकर पहुँचे। डॉक्टर ने बच्चे की जांच की और कहा कि बच्चे को निमोनिया है, इसलिए दो दिन के लिए भर्ती करना होगा।

किरन यादव ने डॉक्टर पर लगाया गम्भीर आरोप

डॉ. महफूज ने एक इंजेक्शन लगाया, और कुछ ही मिनटों में बच्चे की हालत बिगड़ने लगी

हमने डॉक्टर से कहा कि कुछ गड़बड़ हो गई है, लेकिन उन्होंने कहा कि ये सामान्य प्रतिक्रिया है और बच्चे को आईसीयू में रख लिया गया।

नवजात की चाची ने किरण यादव ने क्या कहा

19 अक्तूबर 2025 को जब परिजनों को बच्चे की हालत पर शक हुआ, तो वे उसे लेकर दूसरे अस्पताल पहुँचे। वहां डॉक्टरों ने बताया कि बच्चा पहले ही मृत हो चुका है। डॉक्टर ने आरोपों को बताया बेबुनियाद कहा परिजन की लापरवाही से बच्चे की जान गई। इस सम्बंध में जब बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर महफूज से बात की गई थी तो उन्होंने कहा की बीते शुक्रवार की शाम को आया था।बच्चा पैदा होने के बाद रोया नही था।जिसने कचरा मेडिकल की भाषा मे मीकोनियम कहा जाता है पी लिया था। शरीर ठंडा पड़ चुका था।चेक करने पर आक्सीजन भी कम था।परिजनों से कन्सल्ट लेने के बाद बच्चे को वेंटिलर पर डाला गया। जिसके बाद बच्चे का आक्सीजन लेबल और सीपी बहुत हद तक नार्मल हुआ।इसके बाद स्थिति दूसरे दिन सुबह तक बनी रही।मगर फिर अचानक स्थिति कुछ बिगड़ने लगी । जिसे परिजनों को बताया गया की आक्सीजन अगर ड्रॉप हुआ तो तबियत बिगड़ सकती है।एक सवाल के सवाल में डॉक्टर महफूज ने कहा की बच्चे को मैकोनियम एस्पिरेशन सिंड्रोम नामक बीमारी थी।ये एक ऐसी बीमारी है जिसमे सिल्डेना नामक इंजेक्शन दिया था।आरोपों पर डॉक्टर महफूज ने कहा की दूसरे दिन जब बच्चे की तबियत में सुधार नही हो रहा था तो साथ मे आये परिजनों को बताता गया था की हालत में सुधार नही हो रही है आप बच्चे को आगे किसी और अस्पताल ले जाएं। मगर परिजन बहस करने लगे और अस्पताल में हंगामा भी किये मौके पर पहुंची पुलिस को भी बच्चे को दिखाया गया था।बच्चा जीवित था।आगे इलाज जारी करने में परिजन किसी स्टाफ यहां तक की हमको भी नही देखने दिए।उसके बाद परिजनों ने डॉक्टर एसएल गुप्ता के यहां गए तब भी बच्चा जीवित था। डॉक्टर एसएल गुप्ता के पास सुविधा न होने के कारण आगे रेफर कर दिया।

मौत का कारण पूछने पर डॉक्टर एसएल गुप्ता ने कहा की मौत का कारण परिजन है हमने सही समय पर तबियत बिगड़ने की बात कही थी।और आगे ले जाने की सलाह दिया था।मगर परिजन गलत इंजेक्शन लगाने के आरोप को लेकर अड़े रहे। जिससे सही जगह पहुंचने में देरी हुई।

जिलाधिकारी ने मुसहर समाज को दिया दीपावली का उपहार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र के द्वारा दीपावली के शुभ अवसर पर नयनसंड, गौराबादशाहपुर स्थित कंपोजिट विद्यालय में मुसहर समाज के लोगों के बीच जाकर उन्हें अंगवस्त्रम, मिष्ठान, फल और मोमबत्ती देकर दीपावली की शुभकामनाएं दी गई। इस दौरान उन्होंने बच्चों को बिस्कुट और टाफी भी वितरित किया। जिलाधिकारी ने कहा कि दीपावली के शुभ अवसर पर आप सभी के बीच आकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है, उन्होंने सभी से कहा कि अपने अपने बच्चों को विद्यालय भेजकर उन्हें शिक्षित बनाए, माननीय मुख्यमंत्री जी के स्पष्ट निर्देश है कि समाज के असहाय वंचित लोगों को मुख्य धारा में लाया जाए। जिलाधिकारी के द्वारा शासन से संचालित योजनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए कहा गया कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर जनसुनवाई के दौरान मिलकर अपनी समस्या से अवगत करा सकते है। इस मौके पर

बच्चे ही देश के भविष्य: डॉ. रागिनी सोनकर

सपा विधायक डॉ. रागिनी सोनकर ने शिक्षा की बुनियादी सुविधाओं का किया निरीक्षण

जौनपुर (उत्तरशक्ति) । सपा विधायक मछलीशहर डॉ. रागिनी सोनकर रविवार को विधानसभा क्षेत्र के श्री गणेश विद्यापीठ इंटर कॉलेज भन्नौर और तेज बहादुर सिंह इंटर कॉलेज निगोह में पहुंची। वहां शिक्षा से संबंधित बुनियादी सुविधाओं का निरीक्षण किया। विधायक ने दोनों विद्यालयों की व्यवस्थाओं को देखा और छात्र-छात्राओं से संवाद भी किया किया।

उन्होंने कहा कि बच्चे ही देश के भविष्य हैं। प्रदेश के विकास का रास्ता गांव से ही निकलता है। गांव के बच्चों के सर्वांगीण विकास से ही देश का चहुमुखी विकास होगा। उन्होंने बच्चों से मन लगाकर ईमानदारी से शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने देश और प्रदेश के विकास में भागीदार बनने की अपील की। कहा कि मैं राजनीति में सेवा भाव के लिए आई हूं जब तक राजनीति में रहूंगी तब तक जनता से जुड़कर उनके विकास के बारे में चिंता करूंगी। बच्चों से संवाद का मतलब छात्रों को देश और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। साथ ही उन्हें नई दिशा दिखाना कि वह आगे चलकर शिक्षा के क्षेत्र में कैसे अपने मनपसंद विषय का चयन करें। विधायक इन दिनों लगातार क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों और इंटर कॉलेजों में जा रही हैं। वहां की व्यवस्था देखने के साथ-साथ जो कमियां है उसके लिए शासन को पत्र भी लिख रही हैं।

विवाहिता की संदिग्ध मौत, बिना मायके वालों को बताएं किया अंतिम संस्कार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। रामपुर मड़ियाहूं स्थानीय थाना क्षेत्र के जामालापुर बाजार में रविवार की सुबह एक विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिजन शव का अंतिम संस्कार करने ले जा रहे थे कि मृतका के पिता ने मौके पर पहुंच कर शव को रोकवा दिया। चाँदनी गुप्ता पत्नी धीरज गुप्ता निवासी जामालापुर के रूप में हुई है। लगभग 10 वर्ष पूर्व चाँदनी की शादी धीरज गुप्ता से हुई थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग चाँदनी गुप्ता पत्नी धीरज गुप्ता की संधिग्ध परिस्थितियों में हो गयी। मौत के बाद ससुराल पक्ष ने किसी भी विधिक प्रक्रिया के बगैर शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाने का प्रयास किया लेकिन इसी दौरान मृतका के मायके पक्ष को किसी माध्यम से सूचना मिली, जिसके बाद मृतका के पिता ओमप्रकाश गुप्ता तत्काल मौके पर पहुंचे और गंभीर आरोप लगाते हुए दाह संस्कार को रोकवा दिया। उन्होंने कहा कि उनकी बेटी की मौत सामान्य नहीं है। उन्होंने आशंका जताई कि यह एक सोची-समझी साजिश हो सकती है। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि शव का विधिवत पोस्टमार्टम कराया जाए ताकि मौत के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सके।

जुवा खेलते 5 व्यक्तियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। थाना लाइन बाजार अंतर्गत चौकी चौकियां धाम क्षेत्र में जुवा खेलने के वायरल वीडियो को संज्ञान लेते हुए आज दिनांक 22.10.2025 को विशाल यादव पुत्र चन्द्रशेखर यादव निवासी मंहगूपुर थाना लाइन बाजार जौनपुर उम्र करीब 32 वर्ष, कुल 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। ये वही लोग थे जिनका जुवा खेलते वीडियो वायरल हुआ था। आज भी जुँआ खेलते हुए मण्डी परिषद चौकियाँ से पकड़े गये। इसके सम्बंध में थाना लाइन बाजार पर मु0अ0सं0-411/2025 धारा 13 सार्वजनिक अधिनियम पंजीकृत किया गया।

जौनपुर में भूमि विवाद ने आधा दर्जन लोग हुए घायल

खुटहन, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उक्त क्षेत्र के रसूलपुर गांव में गत मंगलवार को भूमि विवाद को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए। वे सब एक दूसरे पर लाठी डंडा और कुल्हाड़ी लेकर टूट पड़े इन सब से किए गए प्रहार में पांच महिलाओं सहित दर्जन भर लोग घायल हो गए। जिसमें तीन को गंभीर चोटें आईं। सभी घायलों का उपचार सीएससी पर किया गया। गंभीर रूप से घायलों को जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। दोनों पक्षों के आरोपों के आधार पर पुलिस ने 23 लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। एक पक्ष से विजय बहादुर यादव का आरोप है कि विपक्षी उमेश यादव, हरीनाथ, विवेक यादव, राकेश, बाबूराम, प्रेम चंद, आदर्श, आशीष,रिषभ, रितिक,इंद्रकला देवी, अंतिमा, शीला, प्रीति,और बीना देवी पैमाईश के बाद भी चकमार्ग फावड़े से खोदकर चक में मिला रहे थे। विरोध करने पर उक्त लोगों ने लाठी डंडा और कुल्हाड़ी से वार कर दिया। जिसमें विजय यादव, फूलचंद, साहेबलाल, शेर बहादुर और दिव्यांश घायल हो गए। वहीं दूसरे पक्ष के उमेश यादव का आरोप था कि पड़ोसी विजय बहादुर, फूलचंद, साहबलाल, शेर बहादुर, तेज बहादुर, सचिन और चंदन यादव उसके सहन दरवाजे पर मिट्टी पाट कर अवैध रास्ता बना रहे थे। विरोध करने पर उक्त लोगों ने लाठी डंडा से प्रहार कर उमेश यादव, हरीनाथ,बदामा देवी, अंतिमा, मोनी और अंशू देवी को घायल कर दिया। दोनों पक्षों से दी गई तहरीर के आधार पर पुलिस ने कुल 23 आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

मृत्युंजय महादेव धाम उमरछा में सुंदरकांड प्रतियोगिता का आयोजन

उमरछा, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मृत्युंजय महादेव धाम उमरछा में सुंदरकांड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें भगवान शिव के अंश हनुमान जी की वीरता, भक्ति और समर्पण को दशार्या गया। इस अवसर पर पूर्व जिला अध्यक्ष सुशील कुमार उपाध्याय ने कहा, ₹आज के इस सुंदरकांड प्रतियोगिता के अवसर पर आप सभी को बधाई देते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भगवान शिव के अंश हनुमान जी की वीरता, भक्ति और समर्पण को दशार्ने वाले सुंदरकांड का पाठ करना और सुनना हम सभी के लिए अत्यंत पुण्य का कार्य है। त्रेता युग में भगवान राम का साथ देने के लिए हनुमान जी ने अवतार लिया था और उनकी भक्ति और वीरता का उदाहरण हम सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। आज के इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीम हीरा बाबा सनातन ग्रुप हीरापुर जौनपुर को बधाई देता हूं और उनके उज्वल भविष्य की कामना करता हूं। मैं आयोजन समिति को भी बधाई देता हूं कि उन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करके लोगों को धर्म और संस्कृति के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीम हीरा बाबा सनातन ग्रुप हीरापुर जौनपुर के सदस्यों को स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इस टीम के सदस्यों में रवि पाण्डेय, बाबुलनाथ पाण्डेय, आशीष पाण्डेय, अतुल पांडेय और प्रसून पांडेय शामिल थे। प्रतियोगिता की शुरूआत पंडित हीरामनी के मार्गदर्शन में यजमान कुमारी ज्योति द्वारा पूजा पाठ करके की गई। हीरा बाबा सनातन ग्रुप हीरापुर जौनपुर के सदस्यों द्वारा संगीतमय पाठ प्रस्तुत किया गया। दर्शकों के साथ-साथ लाल साहब शुक्ला, कैलाश नाथ शुक्ल और सतीश कुमार उपाध्याय ने अपने निर्णय को बंद लिफाफे में सुरक्षित रखा। कार्यक्रम के अंत में रामायण और हनुमान जी की आरती के बाद भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रमाशंकर उपाध्याय, पद्माकर शुक्ला, ज्वाला प्रसाद मिश्र, सदानंद, जयशंकर शुक्ल, दीना उपाध्याय, अशोक शुक्ल, सूर्यनाथ शुक्ला, अरविंद शुक्ल, कृष्ण शुक्ल, सतीश शुक्ल, राजेश शुक्ला, पदमा उपाध्याय, नीलम, जयशंकर शुक्ला, जय शंकर पाल, पप्पू सिंह, संतोष सिंह, जयनाथ यादव, नरेंद्र सिंह, अरविंद सिंह सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

दीपावली की रात दीप जलाती महिला के साथ दबंग ने की मारपीट, चलाई गोली

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार, रिवॉल्वर बरामद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। रोशनी और खुशियों के पर्व दीपावली की रात उस वक्त दहशत में बदल गई, जब मड़ियाहूं थाना क्षेत्र के राजापुर गांव में दीये जलाने के दौरान एक महिला पर बगल के गांव के ही दबंग ने मारपीट कर दी और हवा में फायर झोंक दिया। गोलियों की आवाज सुनते ही पूरे गांव में अफरा-तफरी मच गई। सूत्रों के अनुसार, पीड़ित महिला रंजना दुबे दीपावली की शाम घर के बाहर दीपक जला रही थीं, तभी जमालिया निवासी राजेंद्र पटेल मौके पर पहुंचा और किसी बात को लेकर विवाद करने लगा। विवाद इतना बढ़ गया कि दबंग ने महिला के साथ मारपीट कर दी और फिर अपने लाइसेंसी रिवॉल्वर से फायर कर दिया। सौभाग्य से गोली किसी को नहीं लगी, लेकिन इस घटना से गांव में हड़कंप मच गया। पीड़िता ने तत्काल थाने पहुंचकर लिखित तहरीर दी, जिस पर पुलिस ने गंभीरता दिखाते हुए आरोपी राजेंद्र पटेल के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी की लाइसेंसी रिवॉल्वर जब्त कर ली है। इस संबंध में क्षेत्राधिकारी मड़ियाहूं गिरेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि मामला में महिला की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर आरोपी को तत्काल हिरासत में ले लिया गया है। उसकी लाइसेंसी रिवॉल्वर जब्त कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।

दीपावली की रात ज्वेलरी शॉप से 20 लाख के सोने-चांदी के आभूषणों की भीषण चोरी

क्षेत्राधिकारी ने किया मौका मुआयना, पुलिस चोरों की खोज में जुटी

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। दीपावली की रात एक ज्वेलर के यहां बड़ी चोरी की घटना ने लोगों के दिलों में भय पैदा कर दिया है। मुंगरा बादशाहपुर नगर के मोहल्ला पकड़ी निवासी भोला सोनी की भोला ज्वेलर्स की दुकान में चोरों ने दीपावली की रात पीछे से सेंध लगाकर करीब 20 लाख रुपये कीमत के सोना और चांदी के आभूषण चोरी कर लिए। घटना की जानकारी होते ही मौके पर क्षेत्राधिकारी प्रतिमा वर्मा समेत फोरेंसिक टीम भी पहुंचकर मौका मुआयना किया। दीपावली की रात भोला ज्वेलर के दुकान के पीछे की तरफ सेंध लगाकर यह चोरी की गई। जिसके चलते सुबह तक किसी को भनक तक नहीं लगी। चोर आलमारी तोड़ कर वेश कीमती जेवरात लेकर चंपत हो गए। दूकान मालिक भोला सोनी ने बताया कि चोरी की जानकारी हमे सुबह तब हुई जब दुकान खोलने पहुंचें। दूकान में बिखरे पड़े सामान को देखकर उनकी चीख निकल गई उनकी चीख-पुकार से आसपास के लोग भी इकट्ठा होने लगे, मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

क्षेत्राधिकारी मछलीशहर प्रतिमा वर्मा ने बताया कि फोरेंसिक टीम भी साथ में है और वे सुराग इकट्ठा कर रहे हैं ताकि चोरों को जल्द से जल्द पकड़ा जा सके। थाने की पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज भी खंगालने शुरू कर दिए हैं। दूकान मालिक भोला सोनी ने बताया कि इस चोरी से उन्हें भारी नुकसान हुआ है। भोला सोनी ने आगे बताया कि करीब बीस लाख रुपए के आभूषण की चोरी हुई है। इस घटना ने आसपास के कारोबारियों को भी सतर्क कर दिया है। दीपावली के जैसे बड़े त्योहार पर ऐसी बड़ी चोरी ने लोगों की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। इस सम्बन्ध में प्रभारी निरीक्षक मुंगरा बादशाहपुर अमरेन्द्र कुमार पांडेय का कहना है कि पीछे से सेंध काटकर चोरी हुई है। इस चोरी के मामले की हर एंगल से जांच शुरू कर दी गई है। मौके पर फोरेंसिक टीम भी जांच कर चुकी है।

पूर्व विधायक सोमारू सरोज का निधन, गार्ड ऑफ ऑनर के साथ दी गई अंतिम विदाई

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। क्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी एवं पूर्व विधायक सोमारू सरोज के निधन की खबर से पूरे जिले में शोक की लहर दौड़ गई। सुबह से ही लोगों का उनके आवास पर श्रद्धांजलि देने के लिए तांता लगा रहा। अंतिम संस्कार के दौरान प्रशासन की ओर से उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देकर भावभीनी विदाई दी गई। इस दौरान सांसद प्रिया सरोज, विधायक तुफानी सरोज, पूर्व सांसद दरोगा सरोज, जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राजबहादुर यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष लालबहादुर यादव, पूर्व दर्जा प्राप्त मंत्री राजनारायण बिंद, पूर्व विधायक मधुबाला पासी, पूर्व विधायक जगराम राम, पूर्व विधायक गुलाब सरोज, रतन सिंह (तरियारी स्टेट), उपजिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी सहित अनेक जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने उनके पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर गहरा शोक व्यक्त किया। नेताओं ने कहा कि सोमारू सरोज सरल, मिलनसार और जनता के सच्चे हितैषी नेता थे, जिन्होंने हमेशा गरीबों और वंचितों की आवाज बुलंद की। उनके निधन से क्षेत्र की राजनीति को अपूरणीय क्षति हुई है।

अंतिम संस्कार के दौरान श्रद्धांजलि देने वालों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। हर किसी की आंखें नम थीं। मुखाग्नि उनके बड़े पुत्र मनोज सरोज ने दी। वे अपने पीछे तीन पुत्रों को छोड़ गए हैं।

मिजार्मुराद में पुलिस पर पथराव और मारपीट के मामले में 5 गिरफ्तार

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद में मिजार्मुराद थाना क्षेत्र के ग्राम बिहड़ा पावर हाउस के पास 21अक्टूबर 2025 को पैसे के लेन-देन को लेकर दो पक्षों के बीच हुए विवाद और मारपीट की घटना में पुलिस पर पथराव करने वाले पांच आरोपियों को मिजार्मुराद पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस घटना में पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए हल्का बल प्रयोग किया, जिसमें दोनों पक्षों के पुरुषों और महिलाओं को चोटें आईं।

घटना की सूचना मिलते ही मिजार्मुराद पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया। इस दौरान कुछ आरोपियों ने पुलिस पर पथराव किया, जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए स्थिति को नियंत्रित किया। इस मामले में पुलिस ने 16 नामजद और लगभग 60 अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। मुकदमा संख्या 0294/2025 के तहत धारा 191 (2)/191 (3)/190/109/326/121(1)/121 (2)/132/324(4) बीएनएस और धारा 7 आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 1932 के तहत मामला दर्ज किया गया है। 21 अक्टूबर 2025 को मिजार्मुराद पुलिस ने इस मामले में निम्नलिखित पांच अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। जिसमें मैना, पत्नी बचाऊ बनवासी, उम्र 44 वर्ष, शीला, पत्नी स्वर्गीय साधू, उम्र 46 वर्ष, बचाऊ बनवासी, पुत्र कुतलू, उम्र 45 वर्ष, बंसी बनवासी, पुत्र स्वर्गीय रमई, उम्र 46 वर्ष, एक बाल अपचारी, उम्र 16 वर्ष शामिल है। गिरफ्तार आरोपी ग्राम बिहड़ा, थाना मिजार्मुराद, वाराणसी के निवासी हैं। पुलिस ने इनके खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है और अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में रसोई का हुआ उद्घाटन

-राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन के दिव्यांग बच्चों को दोपहर में भोजन की रहेगी उपलब्धता

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन के द्वारा दिव्यांग बच्चो के लिये चलाये जा रहे इस पुनर्वास केंद्र के लिये सभी सदस्यों को बहुत साधुवाद व बधाई,जिन्होंने बगैर किसी सरकारी सहायता के निस्वार्थ भाव से स्वयं व्यवस्था करके अब एक समय के भोजन की भी व्यवस्था की है।उक्त बातें शाहजहांपुर के अपर जिला जज आशीष वर्मा व नेहा वर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि रविवार को नगर के रुहट्टा स्थित राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन के पुनर्वास केंद्र पर रसोई के उदघाटन के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि कहीं। विशिष्ट अतिथि प्रदीप मिश्रा ने कहा कि डॉ.राजेश कुमार ने इस पुनीत कार्य मे मुझे सहयोगी बनाया है,इसके लिये मैं बहुत आभारी हूँ।

विशिष्ट अतिथि अरुण सिंह पत्रकार ने कहा कि दिव्यांग जनों के लिये इस पुनीत कार्य के लिये राजेश को बहुत बधाई।विशिष्ट अतिथि अनिल गुप्ता ने सभी सदस्यों को बधाई देते हुए सदैव सहयोग का आश्वासन दिया।विशिष्ट अतिथि डॉ संध्या सिंह ने भी सहयोग सहयोग किया। बिट्टू किन्नर ने सभी को शुभकामना देते हुये सहयोग दिया। इस दौरान पुनर्वास केंद्र पर उपस्थित बच्चो ने बड़े चाव से भोजन किया व अत्यधिक प्रसन्न रहे। ट्रस्ट के प्रबंधक डॉ राजेश कुमार ने बताया कि पुनर्वास केंद्र पर बच्चो के दोपहर के भोजन की व्यवस्था हेतु नई कमेटी बनाई गई थी। कमेटी के सहयोग से ही इस रसोई का उदघाटन सम्भव हो पाया है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम हेतु वित्तीय सहयोग न्यायाधीश पति पत्नी आशीष वर्मा व नेहा वर्मा, अरुण सिंह, डॉ संध्या सिंह,अनिल गुप्ता,रविकांत जायसवाल,अविनाश गोयल शंभू,डॉ राजेश कुमार गुप्ता, बिट्टू किन्नर,नारायण चौरसिया, सुनील वाधवा, पंकज सिंह ने तथा खाद्य सामग्री व बर्तन हेतु सहयोग आशुतोष जायसवाल,रवि चौबे, नवीन मिश्रा, बिट्टू किन्नर, डॉ .संध्या सिंह,अंकिता मिश्रा, राजीव पाठक पत्रकार,अभिषेक गुप्ता ने एवं सेवा कार्य हेतु सहयोग

उपरोक्त सभी सम्मानित जन के अतिरिक्त आराधना, संस्था सचिव किरन शिवानी वर्मा,श्रुति साहू, सदफ मुमताज ,अजय श्रीवास्तव, मनीष सिंह, बिट्टू किन्नर व उनकी दया फाउंडेशन आजमगढ़ टीम), दुर्गेश तिवारी, नितेश साहू, रेखा सिंह, पूनम यादव अमित पांडेय, दीपक श्रीवास्तव, रौनक गुप्ता, रिशु गुप्ता, प्रवेश गुप्ता, संस्था की विशेष शिक्षिका हेमू वर्मा, व साइबर इंस्टिट्यूट के अनुज पटेल ने अपना सहयोग प्रदान किया।

रीना यादव के साथ मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर हो रहा वायरल

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मछलीशहर स्थानीय थाना क्षेत्र अंतर्गत कटाहित खास रामपुर में एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें एक महिला को कुछ लोगों द्वारा मारा पीटा जा रहा है छिना झापटी किया जा रहा है।कटाहित खास रामपुर ग्राम सभा की रीना यादव ने बताया कि मै दर्शन करने हेतु डीह बाबा पर गई थी। वापस आते समय सोप चंद सीता कंचन इस्रावती द्वारा उनके साथ मारपीट व छिनाझापटी की गई। मछली शहर थाने पर जाकर प्रार्थना पत्र दिया प्रार्थना पत्र के आधार पर सोप चंद्र ,इरावती,सीता उर्फ राधिका व कंचन के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया। उक्त लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज होने के बाद वे लोग सुलह समझौता करने के लिए हमेशा धमकाते रहते हैं और पुनःमारने की धमकी देते हैं जिसके लिए मैं क्षेत्राधिकार महोदय को प्रार्थना पत्र देकर अपने सुरक्षा हेतु न्याय की गुहार लगाई हूं।

कुरान शरीफ मुकम्मल करने पर बच्चे एवं उसके उस्ताद मौलाना को किया सम्मानित

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मियांपुर की सामाजिक संस्था मुस्लिम एजुकेशन वेलफेयर सोसाइटी द्वारा संचालित मदरसे के मौलाना साफे ने एक 10 साल के बच्चे कादिर को इस्लामिक ग्रंथ कुरान शरीफ मुकम्मल कराया इस खुशी में कादिर के वालिद मोहम्मद खालिद ने मौलाना को सम्मानित किया और कादिर की हौसला अफजाई मोमेंटो देकर की इस मौके पर कादिर के परिजनों ने कादिर को भविष्य में हाफिज बनाने की बात कही है कादिर ने इस खुशी में मदरसे के अन्य बच्चों को मिठाई खिलाई। वही इस मौके पर कमेटी की तरफ से संचालक बख्तियार आलम ने कादिर को पुरस्कृत किया एवं आए हुए सभी लोगों का धन्यवाद दिया।

पूर्व मंत्री मो.आरिफ खान के जन्मदिवस पर समारोह

मुंबई। अ.भा. कांग्रेस कमिटी के शीर्षस्थ वर्किंग कमिटी के सदस्य, पूर्व मंत्री मो.आरिफ (नसीम)खान के जन्मदिवस पर जरिमरी,कुर्ला स्थित कार्यालय पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. बाबूलाल सिंह, भरत सिंह (प्रवक्ता - महाराष्ट्र कांग्रेस), पत्रकार अनुराग त्रिपाठी, एड.शरीफ खान (अध्यक्ष समता हॉकर्स यूनियन), समाजसेवी डॉ. सचिन सिंह, मैथ्यू चेरियन ने शाल एवं पुष्प गुच्छ प्रदान कर नसीम खान को शुभकामनायें प्रदान किया। इस अवसर पर नसीम खान के हजारों समर्थको ने गाजे बाजे के साथ, नाच गा कर पटाखे फोड़कर,केक काटकर बधाईयां, शुभकामनायें प्रदान किया।

आब्जर्वर ने किया विस सभा क्षेत्र बूथों का निरीक्षण

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत 111-गोरिया कोठी विस सभा क्षेत्र में 6 नवंबर को विधानसभा में होने वाले चुनाव को शांतिपूर्ण माहौल में कराने तथा शत प्रतिशत मतदान को ले बुधवार को ऑब्जर्वर 2014 के आईएस बच्चनेश कुमार अग्रवाल ने महाराजगंज अनुमंडल केनिवार्ची पदाधिकारी सह डीसीएलआर अमन आनंद के साथ दर्जन भर वानरेबल बूथों का निरीक्षण किया राम जनता से बातें की। मतदान केंद्रों पर मौजूद मूलभूत सुविधाओं का जायजा लिया। इस संबंध में निवार्ची पदाधिकारी सह डीसीएलआर अमन कुमार आनंद ने बताया कि मतदान केंद्रों पर शौचालय, पेयजल, रैंप, फर्नीचर, साफ-सफाई, भवनों की स्थिति, मतदान केंद्र पर बूथ संख्या, बीएलओ का नाम, मोबाइल नंबर, गांव का नाम आदि की जानकारी ली गई। निरीक्षण के दौरान सेक्टर पदाधिकारी, प्रधानाध्यापक, बीएलओ, शिक्षकों, आदि को आवश्यक दिशानिर्देश दिया गया। उन्होंने हर हाल में मतदान केंद्रों पर साफ- सफाई एवं मूलभूत सुविधाएं समय सीमा के अंदर पूरा कराने का दिशा निर्देश दिया। जांच के दौरान श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, बी एल ओ, आदि चुनाव से जुड़े कर्मी मौजूद थे।

नाम वापसी के बाद प्रत्याशियों के बीच चुनाव चिन्ह का आवंटन हुआ

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज अनुमंडल मुख्यालय के अनुमंडल कार्यालय में गोरेयाकोठी व महाराजगंज विधानसभा क्षेत्र के लिए चल रहे चुनावी प्रक्रिया में नाम वापसी के बाद मंगलवार प्रत्याशियों के बीच चुनाव चिन्ह का आवंटन किया गया। निवार्ची पदाधिकारी सह एसडीओ अनीता सिंहा ने बताया कि मिले निर्देश के अनुसार बसपा प्रत्याशी रवि रंजन टिशु को हाथी, राष्ट्रीय जनता दल प्रत्यासी विशाल कुमार जायसवाल को लालटेन, जदयू प्रत्याशी हेम नारायण साह को तीर, भारत का किसान मजदूर पार्टी के प्रत्याशी नयन प्रसाद को नारियल फॉर्म, आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी मदन यादव को केतली, पॉलिटिकल टीम इंडिया के प्रत्याशी डॉ विकास कुमार सिंह को बांसुरी, जन सुराज के प्रत्याशी सुनील राय को स्कूल का बास्ता, निर्दलीय प्रत्याशी अंगद कुमार को बिस्कुट, आशीष रंजन सिंह को मोतियों की माला, नीतीश कुमार द्विवेदी को बेंच, रविंद्र कुमार को कंप्यूटर व प्रत्याशी राज किशोर गुप्ता को फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में चुनाव चिन्ह का आवंटन हुआ है।

शिवपुर थाना क्षेत्र में आल्हा-काला मंदिर पर पुजारी हटाने को लेकर ग्रामीण में हुआ बहस बाजी

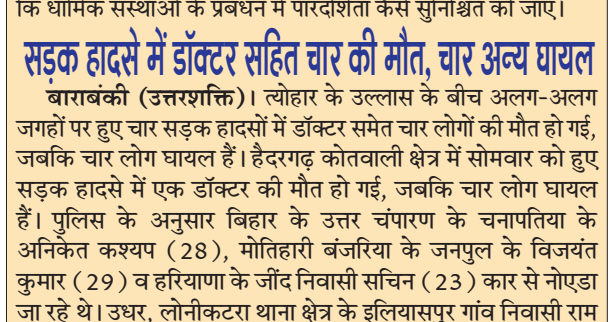

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद के शिवपुर थाना अंतर्गत परमानंदपुर गांव स्थित प्रसिद्ध आल्हा-काला मंदिर पर पुजारी को पदच्युत करने को लेकर दो गुटों के बीच जमकर विवाद हो गया। घटना दोपहर करीब लगभग 11 बजे की बताई जा रही है, जब मंदिर समिति के कुछ सदस्यों और पुजारी समर्थकों के बीच बहस इतनी बढ़ गई कि मामला पुजारी के रहने का समान बाहर निकाल दिया गया। स्थानीय लोगों के अनुसार, पुजारी पर लापरवाही और मंदिर कोष के कथित दुरुपयोग का आरोप लगाया गया था, जिसके चलते समिति ने उन्हें हटाने का फैसला लिया। इससे नाराज पुजारी के समर्थकों ने विरोध जताया, और दोनों पक्षों मे विवाद की सूचना मिलते ही शिवपुर पुलिस फौरन अपने टीम के साथ मौके पर पहुंचकर हालात को काबू में किया। उप निरक्षक जय नारायण, हेड कांस्टेबल वाशिम खान और डायल 112 की पीआरबी की टीम भी तैनात रही। थाना प्रभारी वीरेन्द्र सोनकर ने बताया, विवाद को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझा लिया गया है। कोई गंभीर चोट नहीं लगी, लेकिन दोनों पक्षों को थाने बुलाकर समझाया जा रहा है। मंदिर प्रबंधन समिति से भी बात चल रही है ताकि भविष्य में ऐसी घटना न हो। फिलहाल, कोई केस दर्ज नहीं किया गया है, लेकिन पुलिस निगरानी रखे हुए है। ग्रामीणों का कहना है कि मंदिर आल्हा-काला की लोककथाओं से जुड़ा होने के कारण यहां हमेशा भीड़ रहती है, और छोटे-मोटे विवाद आम हैं। इस घटना ने स्थानीय स्तर पर बहस छेड़ दी है कि धार्मिक संस्थाओं के प्रबंधन में पारदर्शिता कैसे सुनिश्चित की जाए।

सड़क हादसे में डॉक्टर सहित चार की मौत, चार अन्य घायल

बाराबंकी (उत्तरशक्ति)। त्योहार के उल्लास के बीच अलग-अलग जगहों पर हुए चार सड़क हादसों में डॉक्टर समेत चार लोगों की मौत हो गई, जबकि चार लोग घायल हैं। हैदरगढ़ कोतवाली क्षेत्र में सोमवार को हुए सड़क हादसे में एक डॉक्टर की मौत हो गई, जबकि चार लोग घायल हैं। पुलिस के अनुसार बिहार के उत्तर चंपारण के चनापतिया के अनिकेत कश्यप (28), मोतिहारी बंजरिया के जनपुल के विजयंत कुमार (29) व हरियाणा के जींद निवासी सचिन (23) कार से नोएडा जा रहे थे। उधर, लोनीकटरा थाना क्षेत्र के इलियासपुर गांव निवासी राम सुरेश का आरोप है कि मंगलवार दोपहर उनके पुत्र आदित्य उर्फ शालू (25) को दहिला शराब ठेके के पास क्षेत्र के ही लदई का पुरवा गांव निवासी साकेत, शिवम समेत दो अन्य अज्ञात लोगों ने पिटाई कर जख्मी कर दिया था। इसके बाद आदित्य शिकायत करने के लिए बाइक से लोनीकटरा थाने जा रहा था। इस दौरान लखनऊ सुल्तानपुर नेशनल हाईवे पर दहिला डेरी के पास बोलेरो की टक्कर से आदित्य घायल हो गया। गंभीर हालत में पुलिस ने उसे सीएचसी त्रिवेदीगंज भिजवाया जहां मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बोलेरो को कब्जे में ले ली है।

मादक पदार्थ बेचने आए दो आरोपियों को नायगांव पुलिस ने किया गिरफ्तार

बसई (उत्तरशक्ति)। नायगांव के मामला प्रकाश में आया है। आपको बता दे की 20 किलो 669 ग्राम वजन 4,54,708/- रुपये कीमत का गांजा नामक मादक पदार्थ बेचने आए दो आरोपियों को गिरफ्तार नायगांव पुलिस थाने की अपराध शाखा की टीम ने कार्रवाई किया है। नायगांव पुलिस थाने की सीमा में 11/10/2025 को वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक विजय कदम के आदेश से नायगांव पुलिस थाने अपराध प्रकटीकरण शाखा के पुउपनिरी जानेधर आसबे, पोहवा शेखर पवार, पोहवा सचिन ओलेकर, पोहवा सचिन मोहिते, पोशि सचिन खताक, पोशि जयवंत खंडवी, पोशि अशोक पाटील, पोशि पांडुरंग महाले, और मपोशि जयश्री कानवर जब अवैध धंधों पर कार्रवाई करने के लिए गश्त कर रहे थे, तब आशा नगर, कोही गांव, ता. वसई, जि. पालघर में दो व्यक्ति दिखाई दिए। एक व्यक्ति के हाथ में खाकी रंग के सेलोटेप से लिपटा हुआ आयताकार पुड़का था और दूसरे व्यक्ति के हाथ में भी खाकी रंग के सेलोटेप से लिपटा हुआ आयताकार पुड़का और एक पीले रंग की कपड़े की थैली थी। उनकी हरकतें संदिग्ध लगने पर उन्हें हिरासत में लेकर उनका नाम-पता पूछा गया, तो उन्होंने अपना नाम 1) निकेत दशरथ राऊत, उम्र 19 वर्ष, व्यवसाय- बेरोजगार, निवासी- निशाका बिल्डिंग के पीछे की बस्ती, पाझर तलाव रोड, वाकीपाडा, नायगांव पूर्व, ता. वसई, जि. पालघर, 2) अभिषेक जसवंत सिंग, उम्र 24 वर्ष, व्यवसाय- बेरोजगार, निवासी- आशानगर, चिंचोटी, बाफाणे, नायगांव पूर्व, ता. वसई, जि. पालघर बताया। दोनों आरोपियों के कब्जे से कुल 4,54,708/- रुपये कीमत का 20 किलो 669 ग्राम वजनी गांजा नामक मादक पदार्थ अवैध रूप से पाया गया। इस कार्रवाई में गांजा और आरोपियों के मोबाइल फोन सहित कुल 4,85,708/- रुपये कीमत का माल जब्त किया गया है। उनके खिलाफ नायगांव पुलिस थाने में गुन्हा रजि. नं. 429/2025 एन.डी.पी.एस. कानून 1984 की धारा 8 (सी), 20 (बी), 22 (सी), 29 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

दोनों आरोपियों ने बताया कि वे उक्त गांजा नामक मादक पदार्थ महिला आयशा शिवदत्त सिंग, उम्र- 27 वर्ष, निवासी- आशानगर, गोशाल के पास, चिंचोटी, ता. वसई, जि. पालघर और महिला मंदाकिनी सीताराम थोरात, उम्र- 56 वर्ष, निवासी- सर्वे नं 36, चिंचोटी, कामन, ता. वसई, जि. पालघर से लाकर बेचने के लिए आए थे। अतः उक्त महिलाओं की भी इस अपराध में संलिप्तता पाए जाने पर उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया है। इस मामले की आगे की जांच पुउपनिरी जानेधर आसबे कर रहे हैं।

यह कार्रवाई निकेत कौशिक, पुलिस आयुक्त, तथा दत्तात्रय शिंदे, अपर पुलिस आयुक्त, श्रीमती पौर्णिमा चौगुले, पुलिस उप आयुक्त, परिमंडल - 2 वसई, नवनाथ घोगरे, सहायक पुलिस आयुक्त वसई विभाग, नायगांव पुलिस थाने के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक विजय कदम, पुलिस निरीक्षक (अपराध) अभिजीत मडके, के मार्गदर्शन में सपोनि गणेश केकान, पुलिस उप निरीक्षक जानेधर आसबे, पोहवा शेखर पवार, सचिन ओलेकर, सचिन मोहिते, पो.अंम. सचिन खंताल, जयवंत बंडवी, अमर पवार, चेतन ठाकरे, अशोक पाटील, पांडुरंग महाले ने सफलतापूर्वक कारवाई किया।

वाराणसी में इंडिगो की फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग प्रशासन और पायलट की तत्परता से टली बड़ी दुर्घटना

सुरेश गांधी

फ्यूल टैंक में लीक से मची अफरा-तफरी, पायलट की सूझबूझ से बची 166 जिंदगियां

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। कोलकाता से श्रीनगर जा रही इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट 6इ-6961 को बुधवार को वाराणसी के लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। विमान के फ्यूल टैंक में लीक की सूचना मिलते ही एटीसी को सतर्क किया गया। शाम 4 बजकर 10 मिनट पर विमान को सुरक्षित उतारा गया। विमान में सवार 166 यात्रियों और क्रू मेंबर्स को सकुशल बाहर निकाल लिया गया।

वाराणसी एयरपोर्ट के एटीसी को जैसे ही विमान में फ्यूल लीकेज की सूचना मिली, सभी एजेंसियां अलर्ट पर आ गईं। रनवे पर फायर टेंडर, एम्बुलेंस और सुरक्षा बलों को तैनात कर दिया गया। पायलट ने अपनी सूझबूझ दिखाते हुए विमान को सुरक्षित लैंडिंग कराई। वाराणसी पुलिस ने कहा, गोमती जोन से मिली सूचना के अनुसार इंडिगो फ्लाइट 6इ-6961 में तकनीकी दिक्कत की शिकायत के बाद आपात लैंडिंग कराई गई। सभी यात्री और क्रू सदस्य पूरी तरह सुरक्षित हैं।ह्व वाराणसी एयरपोर्ट प्रशासन, पुलिस और इंडिगो स्टाफ की समन्वित तत्परता ने एक बड़ी दुर्घटना को टाल दिया। पायलट की सूझबूझ और ग्राउंड क्रू के त्वरित एक्शन से संभावित खतरा टल गया। यह घटना एक बार फिर विमानन सुरक्षा प्रणाली पर सवाल उठाती है, क्या सभी मेंटेनेंस प्रोटोकॉल समय पर और मानक के अनुसार पूरे किए जा रहे हैं? फिरहाल, लैंडिंग के बाद यात्रियों को एराइवल एरिया में सुरक्षित बैठाया गया। एयरपोर्ट प्रबंधन ने यात्रियों को भोजन-पानी और वैकल्पिक उड़ान की सुविधा देने की प्रक्रिया शुरू की गयी. विमान को टेक्निकल बे एरिया में खड़ा कर मेंटेनेंस टीम ने जांच शुरू कर दी। एयरपोर्ट अधिकारियों ने बताया कि स्थिति नियंत्रण में है और हवाई अड्डे का सामान्य परिचालन बहाल कर दिया गया है। लगातार तकनीकी गड़बड़ियां यह संकेत देती हैं कि देश के वाणिज्यिक विमानों की सुरक्षा जांच प्रणाली को और मजबूत करने की जरूरत है। यात्रियों की जान केवल पायलट की समझ पर नहीं, बल्कि सख्त तकनीकी निगरानी और मेंटेनेंस अनुशासन पर भी निर्भर है। इस घटना में सौभाग्य से सभी सुरक्षित हैं, लेकिन यह एक चेतावनी है कि आसमान में सुरक्षा की हर परत को और पुख्ता किया जाए। इंडिगो एयरलाइंस की ओर से जारी बयान में कहा गया, वाराणसी एयरपोर्ट पर फ्लाइट 6इ-6961 की सुरक्षित लैंडिंग कराई गई। हमारे पायलटों ने सभी मानक प्रक्रियाओं का पालन किया। यात्रियों और क्रू की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इससे पहले 10 अक्टूबर को इंडिगो की फ्लाइट 6इ-7253 में उड़ान के दौरान फ्रंट ग्लास में दरार आने से हड़कंप मच गया था। वह विमान मदुरै से चेन्नई जा रहा था। रात 11:12 बजे लैंडिंग के दौरान पायलट ने एटीसी को स्थिति की जानकारी दी और इमरजेंसी लैंडिंग की अनुमति मांगी। सभी 76 यात्री सुरक्षित उतारे गए और विमान को मरम्मत के लिए बे एरिया भेजा गया।

चाइल्ड एजुकेशन एंड हेल्थ केयर फाउंडेशन द्वारा बच्चों में दिवाली का उपहार वितरित

मुंबई। दीवाली के शुभ अवसर पर चाइल्ड एजुकेशन एंड हेल्थ केयर फाउंडेशन दीवाली का त्योहार बच्चों के संग के अंतर्गत जौनपुर जिले के रामपुर कस्बे में स्थित मई रामपुर गांव के लगभग 50 बच्चों के संग दिवाली का त्योहार मनाया। इस अवसर पर बच्चों को पटाखे, बिस्किट और चाकलेट उपहार में दिए गए । आज बच्चों ने पढ़ाई के साथ साथ स्वच्छता अभियान भी चलाया। जिसके तहत बच्चों ने आसपास के जगहों की साफ सफाई की। बच्चों को नैतिक शिक्षा भी दी गई। जिसमें बच्चों को खान पान, रहन सहन, बात व्यवहार में किन किन बातों का ध्यान देना है। यह बताया गया। दीवाली गिफ्ट मिलने की खुशी बच्चों के चेहरे पर साफ देखी जा सकती थी। चाइल्ड एजुकेशन एंड हेल्थ केयर फाउंडेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर मनोज राय ने बताया कि एनजीओ अभी कई दिनों से मई रामपुर गांव में अपना स्वस्थ भारत शिक्षित भारत मिशन चला रहा है। आगे इसका विस्तार अन्य गांवों में भी करने योजना है ताकि स्वस्थ भारत शिक्षित भारत मिशन ढेर सारे बच्चों तक पहुंच सके। दीवाली का त्योहार बच्चों के संग कार्यक्रम का सफल आयोजन उत्तर प्रदेश के डायरेक्टर बिपिन कुमार राय के मार्गदर्शन और रवींद्र कुमार, लाल जी भागीरथी शिक्षिका साधना, प्रियंका, चांदनी के विशेष सहयोग से संपन्न हुआ।

उत्तर भारतीय विकास संस्था ने मनाया दीपावली स्नेह सम्मेलन

पालघर (उत्तरशक्ति)। नालासोपारा-उत्तर भारतीय विकास संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश पांडे द्वारा आयोजित दिवाली स्नेह मिलन समारोह कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में लोग एकत्र हुए । संस्था अध्यक्ष राजेश पांडे द्वारा मिष्ठान एवं स्वल्पाहार का प्रबंध किया गया था। सभी उपस्थित लोगों ने लुफ्त उठाया एक दूसरे से गले मिलकर दीपावली की शुभकामना दिएं।

दीपावली सौहार्द प्रेम का प्रमुख त्योहार हैं आज के दिन सब लोग अपने सीके गलवे भूल चूक भुला कर एक दूसरे से प्यार बांटते है, यह सत्य में अंधकार को मिटाने वाला है। समस्त सुधिजनों को प्रकाशित करने हेतु यह त्योहार मनाया जाता है। लोग मुंह मीठा कराकर अपनी अपनी खुशी का इजहार करते है। इसमें समाज के अतिविशिष्ट लोग अपनी उपस्थिति दर्ज कराए बता दें कि उत्तर भारतीय विकास संस्था बहुजन विकास आघाड़ी द्वारा पुरस्कृत संस्था है। राजेश पांडे बहुजन विकास आघाड़ी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के बिलकुल करीबी है। सभी शीर्ष के नेता इनका आदर सम्मान करते हैं। वहां उपस्थित सभीउत्तर भारतीय संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे, जिनमे मुख्य रूप से अजय तिवारी , शैलेश तिवारी, विजय सिंह डबलू, शारदा प्रसाद तिवारी, अजय सिंह ठाकुर वरिष्ठ पत्रकार लालशेखर सिंह ब्यूरो चीफ , पालघर नागेन्द्र सिंह , राजेश बाबा, के पी शर्मा शिक्षक आदि शिक्षक एवं वरिष्ठ समाज सेवी वहां उपस्थित रहे। सभी लोगों ने दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी। एक दूसरे को बधाई हार्दिक शुभेच्छा दी । जय श्री राम का जय घोष करते हुए सब लोग अपने अपने परिवार में गए।

पुस्तकालय सह वाचनालय पर हुआ कार्यक्रम

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज प्रखंड स्थित बंगरा गांव के रघुबीर सिंह पुस्तकालय सह वाचनालय पर दीपोत्सव मनाया गया।संचालित पुस्तकालय पर निःशुल्क शिक्षा, संस्कार, समर्पण, सहयोग, सेवा कार्यक्रम पर प्रतिदिन अपराह्न 4 बजे से शाम 7 बजे तक कार्यक्रम आयोजन होता है। दीपावली के पावन अवसर पर संध्या समय बच्चों द्वारा तैयार रंगोली प्रतियोगिता, दीपोत्सव कार्यक्रम बड़े ही आकर्षक, सुन्दर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम संयोजक जोगेशर पाण्डेय के अनुश्रवण में वर्ग 6,7, 8के बच्चों द्वारा प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया। वही पुस्तकालय सह वाचनालय परिवार बंगरा के मानद सदस्य शिक्षक कुमार राजकपूर टीपू ने प्रतियोगिता में शामिल बच्चों को संबोधित करते हुए बताया कि दीपावली में जलते दिया हमे इस बात का दर्शन कराता है कि मनुष्य के सजग है ।दीपावली का पर्व अमर है। साथ ही साथ दीपावली के अवसर पर रंगोली बनाना वास्तु शास्त्र के अनुसार रंगोली का आकार, उसमें भरे जाने वाले रंग खुशहाली, समृद्धि, मान सम्मान और प्रगति का द्योतक है। मौके पर शिक्षिका दिव्या उपाध्याय, खुशबू सिंह, ऋतिक कुमार सिंह, प्रिया सिंह, कौशल्या देवी, तुषार कुमार, लाल मोहम्मद, अशोक कुमार राउत, शिक्षिका संगीता कुमारी, पीयूष सिंह सहित समिति सदस्य उपस्थित रहे।

जौनपुर में पत्नी करती थी प्रताड़ित तो युवक ने लगाई फांसी

चंदवक, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। चंदवक घाट के बगल में स्थित मरी माई के बगीचे में बुधवार भोर में साड़ी के सहारे बास के बीम से युवक की लटकती लाश मिलने से सनसनी फैल गई। दौड़ लगाने गए युवकों व आस पास के लोगों ने पुलिस को सूचित किया। पुलिस के पहुंचने के बाद लोगों ने उसकी पहचान रामजीत नाविक के पुत्र 30 वर्षीय पुत्र धर्मेंद्र उर्फ गोलू के रूप में की। मृतक की मां लालदेई ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर ससुराल पक्ष व गोलू की पत्नी पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। पुलिस शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई पूरी की चंदवक घाट निवासी रामजीत नाविक के पुत्र धर्मेंद्र उर्फ गोलू नाविक का विवाह दो वर्ष पूर्व गौराबादशाहपुर निवासी सावरचंद की पुत्री प्रीति से हुई थी। शादी के बाद से ही वैवाहिक संबंध अच्छा नहीं चल रहा था। मृतक के मां लालदेई का आरोप है कि ससुराल पक्ष के लोग उसकी पत्नी से मिलकर प्रताड़ित करते रहते थे। मंगलवार रात में भी पत्नी से झगड़ा हुआ।इसके बाद वह घर से निकल गया। मरी माई के बगीचे में भोर में बास से बने बीम से साड़ी के फंदे से लटकती लाश दौड़ लगाने गए युवकों ने भोर में देखा तो शोर मचाया।आसपास के लोग जुटे और पुलिस को सूचना दी।पुलिस पहुंची तो युवक की पहचान हुई। उसके कमर में बंधी मोबाइल मिली। पुलिस शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई पूरी की। मृतक की मां लालदेई द्वारा पुलिस को दी गई तहरीर में प्रताड़ित करने के आरोप की जांच की जांच की जा रही है। इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक सत्यप्रकाश सिंह ने बताया कि मोबाइल की जांच व पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होंगी।

पं. अवधनारायण तिवारी की स्मृति में बने मार्ग के चौड़ीकरण के बाद नाम पट्टिका का लोकार्पण

-आदेश मिश्र

मुंबई। अंधेरी पूर्व के लोकप्रिय विधायक मुरजी पटेल(काका) ने अपने विधायक निधि से अंधेरी पूर्व में स्थित स्व.अवधनारायण तिवारी मार्ग के नूतनीकरण के पश्चात तिवारी परिवार द्वारा आयोजित एक समारोह में इसका लोकार्पण किया गया। मुरजी पटेल (काका)कहा कि अंधेरी पूर्व के जो भी चौंक, मार्ग और मंदिर जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है,उसे संज्ञान में लेकर नूतनीकरण का कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जायेगा। सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष आचार्य पवन त्रिपाठी ने कहा यह गर्व की बात है कि मुम्बई महानगर में किसी उत्तर भारतीय के नाम पर चौक और मार्ग का निर्माण हुआ है। डॉ. राधेश्याम ए.तिवारी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। डॉ. शिवश्याम ए.तिवारी और डॉ संदीप ए तिवारी व पौत्र मानवेंद्र तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया। समाजसेवी प्रेमचंद (बाबा) तिवारी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।इस अवसर पर शिक्षाविद् डॉ हृदय नारायण मिश्रा, वरिष्ठ समाजसेवी श्रीकांत पाण्डेय, उद्योगपति हरिशंकर तिवारी, पूर्व नगर सेवक सुरेंद्र दुबे,पंकज यादव, पूर्व नगरसेविका संध्या सुनील यादव, भाजपा नेता राम आसरे उपाध्याय, कांग्रेस नेता रमेश मिश्रा, मिडिया कर्मियी प्रमोद श्यामाचरण पाण्डेय, समाजसेवी जगत गौतम, विनोद तिवारी, भाजपा नेता अशोक पाण्डेय, बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. डी.के.सिंह, रविशंकर दुबे,रामा चौबे,दिनेश प्रताप सिंह, सूर्यप्रकाश (संतोष) मिश्रा,बच्ची सिंह,उत्तम पाण्डेय ,नवल सिंह आदि उपस्थित थे। डॉ शिवश्याम ए.तिवारी ने आभार व्यक्त किया।

बिहार में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद फिर मनाएंगे दीवाली : एसएम खान

मुंबई। भारतीय जनता पार्टी, अल्पसंख्यक विभाग के महाराष्ट्र प्रदेश उपाध्यक्ष एसएम खान की तरफ से आज वसोर्वा विधानसभा के आनंद नगर सिग्नल के पास स्थित उनके कार्यालय पर लाडली बहनों को दिवाली पर मिठाई का तोहफा दिया गया। इस मौके पर वहां उपस्थित सैकड़ो लाडली बहनों के साथ-साथ बच्चों, नौजवान व बुजुर्गों को भी श्री खान की तरफ से मिठाई का उपहार देकर शुभकामनाएं दी गई। एसएम खान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत का डंका पूरे विश्व में बज रहा है वही महाराष्ट्र में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में महाराष्ट्र विकास की नई ऊंचाई को छू रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार में हो रहे चुनाव के समय जो भी हमारे बिहारी भाई बिहार में छठ मनाने जा रहे हैं। वह एनडीए के पक्ष में मतदान कर एक बार फिर पूर्ण बहुमत के साथ बिहार में सुशासन और विकास की गति को तेज करें। उन्होंने कहा कि बिहार में एनडीए की सरकार बनने के बाद वे फिर बिहारी भाइयों के बीच मिठाई बांटकर दिवाली मनाएंगे। इस अवसर पर उनके साथ भारी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धूमधाम से रिसौरा में मनाई गई काली पूजा

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज प्रखंड क्षेत्र के रिसौरा पंचायत के विशुनपुरा गांव के काली स्थान पर विगत 24 वर्ष से हर साल की भांति इस साल भी काली पूजा धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर मंदिर में विशेष प्रथम अर्चना की गई और भक्तों ने मां काली की भक्ति में लीन होकर आशीर्वाद प्राप्त किया। 48 घंटे के काली पूजा के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे । गांव के कोने-कोने की महिला पुरुष पूजा में शामिल होकर वातावरण को जीत के गंजों से भक्ति में बना रखा था। पूजा समिति में परशुराम प्रसाद.बच्चालाल प्रसाद,पपु कुमार यादव,मुकेश कुमार यादव, उजय कुमार, ओम प्रकाश यादव, अरुण कुमार यादव, सकलदेव यादव, राजेश कुमार यादव, राजेश्वर यादव,भागीरथ यादव, हरिकिशोर, महतो, झूलन बैठा, मो मंसूर आलम पूर्व मुखिया, बालेश्वर प्रसाद, बिस्कर्मा प्रसाद, रूपचंद यादव आदि श्रद्धालु शामिल थे।

बुजुर्ग से चटवाई पेशाब, सीएम योगी तक भी पहुंच गई बात

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से इंसानियत को झकझोर कर देने वाली घटना सामने आई है,, जहां एक दलित बुजुर्ग को पेशाब चाटने पर मजबूर किया गया,,इस अमानवीय घटना ने एक बार फिर समाज के उस विकृत रुप को उजागर किया है,,जिसका सामना दलित लोग अक्सर करते आ रहे हैं। ये किसी से छिपा नहीं है कि भारत में दलितों पर अत्याचार अब भी जारी है, लेकिन, इस घटना में जिस तरीके से दबंग आरोपी ने सारी हदों को पार किया है, उसने मानवता पर कई सवाल खड़े दिए है। जानकारी के लिए बता दें, 70 साल के बुजुर्ग के साथ पेशाब चटवाने की शर्मसार घटना काकोरी नगर पंचायत के शीतला देवी मंदिर परिसर में हुई है। बताया जा रहा है,,70 साल के रामपाल ने गलती से मंदिर परिसर में पेशाब कर दी,,इसी से गुस्साए दबंग ने दलित व्यक्ति को मूत्र चटवाई,,जमीन को धुलवाया और आइंदा से मंदिर के अंदर न जाने की धमकी तक दी,,दबंग इतने में नहीं रुका और उसने बुजुर्ग को जातिसूचक गालियां तक दी।

बता दें कि, पीड़ित रामपाल रावत की शिकायत पर अब पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एससी-एसटी एक्ट में मामला दर्ज कर लिया है इस मामले का सीएम योगी ने भी संज्ञान लिया है,,वहीं, दलित अस्मिता के साथ खिलवाड़ वाली इस घटना पर पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल ने पीड़ित से उसके घर पहुंचकर मुलाकात की है,,इसके अलावा, सपा सांसद आरके चौधरी ने भी पीड़ित परिवार से मुलाकात कर दलित अस्मिता पर किसी भी प्रकार के समझौता न करने की बात कही।

दलित बुजुर्ग के साथ हुई इस घटना पर अब सियासत भी शुरू हो गई,,वहीं इस घटना ने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव की पोल खोल दी है,,और समाज की उस विकृत मानसिकता को उजागर किया है,, जिसका सामना अक्सर समाज में दलितों को करना पड़ता है।

खुदरा व्यवसाय भारत की नींव है: अजीत सिंह बग्गा

*ऑनलाइन व्यापार के खिलाफ खुदरा व्यापारियों का हुंकार

*काशी बिस्कुट कन्फेक्शनरी व्यापार मंडल ने मनाया दीपावली महोत्सव, व्यापारिक चुनौतियों पर हुई गहन चर्चा

*स्थानीय व्यापार को बढ़ावा देने का संकल्प

-सुरेश गांधी

वाराणसी. महमूरगंज स्थित चौरसिया लॉन बुधवार को व्यापारी एकता और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प का साक्षी बना। वाराणसी व्यापार मंडल से संबद्ध काशी बिस्कुट कन्फेक्शनरी व्यापार मंडल द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। दीपों की उजास और सजावट के बीच मंच पर जब व्यापारी समाज के प्रतिनिधि जुटे तो उनके स्वर में उत्सव के साथ-साथ चिंता भी झलकी–चिंता उस ई-कॉमर्स संस्कृति की, जो धीरे-धीरे देश के खुदरा व्यवसाय की जड़ों को खोखला कर रही है।

खास यह है कि दीपावली की जगमगाहट के बीच यह आयोजन केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक चेतावनी थी ऑनलाइन लालच के अंधेरे में खोते व्यापार को बचाने की चेतावनी। काशी के व्यापारियों ने आज यह संदेश दिया कि जब तक स्थानीय बाजार की रौनक कायम है, तब तक भारत की अर्थव्यवस्था की नींव मजबूत रहेगी। अध्यक्ष अजीत सिंह बग्गा ने अपने संबोधन में कहा खुदरा व्यवसाय भारत वर्ष की आत्मा है। यह सिर्फ व्यापार नहीं, बल्कि समाज के हर सुख-दुख में भागीदार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत का जो आह्वान किया है, उसे जमीनी स्तर पर साकार करने की जिम्मेदारी हम सबकी है। उन्होंने दीपावली और डाला छठ की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश के हर नागरिक को अपने मोहल्ले और शहर के व्यापारियों से ही खरीदारी करनी चाहिए ताकि आर्थिक प्रवाह देश के भीतर रहे, न कि विदेशी कंपनियों के खातों में चला जाए।

लोकल से ही आत्मनिर्भर भारत का दीप जलेगा : अजीत सिंह

ऑनलाइन कंपनियों से व्यापार करने से न केवल क्वालिटी प्रभावित होती है, बल्कि उपभोक्ता के पैसे भी सुरक्षित नहीं रहते। ऑनलाइन व्यापार एक दीमक की तरह है, जो धीरे-धीरे देश के खुदरा उद्योग की जड़ों को चाट रहा है। अब समय आ गया है कि हम अपने घर से ही इसका बहिष्कार करें। उन्होंने कहा कि जनता को जागरूक करना होगा कि वे अपने आसपास की दुकानों से ही खरीदारी करें ताकि व्यापारी, कर्मचारी और श्रमिक–सभी की आजीविका सुरक्षित रहे।

सरकार से 1000 रुपये से अधिक की ऑनलाइन बिक्री पर रोक लगाने की मांग

सभा के आरंभ में महामंत्री कविंद्र जायसवाल और प्रदेश उपाध्यक्ष रमेश निरंकारी ने ई-कॉमर्स कंपनियों पर खुलकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि त्योहारों के मौसम में ये ऑनलाइन कंपनियां बड़े-बड़े विज्ञापन और लुभावने ऑफर देकर फुटकर व्यापारियों की रीढ़ तोड़ रही हैं। हर खरीदारी पर छूट का लालच देकर ये जनता को अपने जाल में फंसा रही हैं, जबकि देश के छोटे व्यापारी धीरे-धीरे हाशिए पर चले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीएसटी, एफएसएसएआई और ड्रग लाइसेंस के नए नियमों ने व्यापारियों के लिए राह और कठिन बना दी है। सरकार को इस दिशा में सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए, ताकि खुदरा व्यापारी फिर से सशक्त हो सकें। सरकार से आग्रह किया कि ?1000 से अधिक मूल्य की वस्तुओं की ऑनलाइन बिक्री पर रोक लगाई जाए। उन्होंने कहा कि छोटे उद्योग जैसे आटा, सूजी, भुजिया, मसाले, अचार, बेकरी, मुरब्बा आदि जिनका निर्माण स्थानीय स्तर पर होता है, वे ऑनलाइन और ब्रांडेड कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में पिसते जा रहे हैं। ब्रांडेड और अनब्रांडेड के अंतर ने हमारे कुटीर उद्योगों की कमर तोड़ दी है। सरकार को ऐसे उद्योगों को विशेष संरक्षण देना चाहिए।

फूड एंड ड्रग्स लाइसेंस पर व्यापारी परेशान

मीडिया प्रभारी विकास गुप्ता ने कहा कि फूड एंड ड्रग्स विभाग के नए नियमों से छोटे व्यापारियों का शोषण बढ़ा है। केवाईसी के नाम पर लाइसेंस नवीनीकरण में हो रही देरी और फूड सप्लीमेंट को ड्रग लाइसेंस की श्रेणी में लाना व्यापारियों के लिए बेहद कठिन कदम है। उन्होंने यह भी कहा कि ठेला-पटरी व्यापारियों तक को एफएसएसएआई के दायरे में लाना अनुचित है, क्योंकि यह लघु उद्यमों के अस्तित्व पर सीधा प्रहार है।

दीपों की रोशनी में व्यापारी एकता का संदेश

कार्यक्रम के अंत में दीपावली और डाला छठ की शुभकामनाओं के साथ सभी व्यापारियों ने संकल्प लिया कि वे अपने घर से ऑनलाइन व्यापार का बहिष्कार करेंगे और स्थानीय उद्योग और दुकानदारों के समर्थन में जनजागरण अभियान चलाएंगे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में व्यापारी गण उपस्थित रहे जिनमें कविंद्र जायसवाल, सुशील लखमणि, शिवप्रकाश जायसवाल, विश्वनाथ दुबे, प्रभाकर मिश्रा, ऋषि केशरी, गुड़गीत बग्गा, संजय गुप्ता, मनीष गुप्ता, राजीव वर्मा, अम्बे सिंह, धर्मेंद्र सिंह, आरती शर्मा, नीलिमा चौबे, हुमा बानो, प्रिया अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य व्यापारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय संगठन मंत्री, वाराणसी व्यापार मंडल अध्यक्ष एवं काशी बिस्कुट कन्फेक्शनरी व्यापार मंडल अध्यक्ष अजीत सिंह बग्गा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में महानगर अध्यक्ष प्रदीप अग्रहरी, जिला अध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. के.के. त्रिपाठी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री रमेश निरंकारी ने किया।

समाज विकास सेवा संघ संस्था द्वारा आदिवासी परवारों में दीपावली निमित्त घरेलू सामग्री, मिठाई वितरण व भंडारा संपन्न

दिया दर्शे ब्रह्मा जगत सृष्टिकर्ता।
भवानी सदा शंभु ओ विघ्नहर्ता।।
महाविष्णु चिन्मूर्ति लक्ष्मी पधारी।
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी।।

मुंबई। नर सेवा - नारायण सेवा की परम दिव्य प्रेरणा को अपना कर्मपथ बनाने वाले समाज विकास सेवा संघ (SVSS) द्वारा मुंबई से 70 किमी दूर सामाजिक पिछड़ापन व गरीबी झेल रहे बदलापुर के कन्होर गाँव के अतिगरीब आदिवासी परिवारों में दीपावली पर्व निमित्त घरेलू सामग्री व मिठाई वितरण कार्यक्रम और भंडारे का आयोजन किया गया । गाँव के प्रत्येक आदिवासी परिवार भी दीपावली पर्व मना सकें। उनके घर भी दीपावली का दिया जल सके, तरसती निगाहों से मजबूर बच्चे भी दीपावली खुशी से मना सकें इस उद्देश्य से गाँव के सभी आदिवासी परिवारों में दीपावली निमित्त अनाज, दीप, मिठाइयाँ, चॉकलेट, साबुन, कंबल के साथ साथ पाणीटब जैसी जीवनावश्यक वस्तुओं का वितरण किया गया। क्या बच्चा क्या बूढा क्या जवान सभी नें पूरे हर्षोल्लास से इस कार्यक्रम में भाग लिया व भोजन महाप्रसाद का लाभ लिया। इस कार्यक्रम को अपने अथक प्रयास से आयोजित व सफल बनाने वाले समाज विकास सेवा संघ के संस्थापक विनय मिश्रा, अध्यक्ष एडवोकेट पवन करकेरा, संगठन के महासचिव व AM न्यूज के रिपोर्टर कन्हैयालाल यादव व अन्य सहयोगी कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में ग्रामवासियों की ओर से संयोजक गोंधाली और आनंदवन गुरु मंदिर का विशेष सहयोग रहा। समाज विकास सेवा संघ एक पंजीकृत सामाजिक संस्था है जो विभिन्न स्तर पर समाज के सामूहिक उत्थान, जनजागरण व राष्ट्रहित के कई महत्वपूर्ण कार्य करती है।

कफ सिरप पीने के बाद महिला की मौत!

कोटा। राजस्थान के कोटा शहर से एक संदिग्ध और दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। अनंतपुरा थाना क्षेत्र के अजय आहूजा नगर में रहने वाली कमला देवी (55) की मौत कफ सिरप पीने के बाद हो गई। मृतक के बेटे का दावा है कि खांसी-जुकाम के इलाज के लिए लिया गया सिरप उनके लिए मौत बन गया। कमला देवी दीपावली की तैयारियों में व्यस्त थीं, तभी उन्हें सर्दी-जुकाम हो गया। बेचैनी महसूस होने पर उनके बेटे ने रंगबाड़ी क्षेत्र के नागर मेडिकल स्टोर से सिरप मंगवाया। सिरप के दो ढक्कन लेने के बाद उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई- घबराहट, बेचैनी और कमजोरी बढ़ने लगी। परिवार ने उन्हें तुरंत न्यू मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों ने ECG और अन्य जांचें कीं। डॉक्टरों के अनुसार, कमला देवी की हृदय गति असामान्य रूप से कम थी। हालांकि उपचार शुरू किया गया, लेकिन रात के समय इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। घटना की सूचना पर अनंतपुरा थाना पुलिस भी अस्पताल पहुंची। एसआई रोहित कुमार ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया है। परिजनों के बयान दर्ज किए गए हैं और कफ सिरप के सैंपल जांच के लिए सुरक्षित किए गए हैं। प्राथमिक जांच में मामला दवा के सेवन के बाद तबीयत बिगड़ने का प्रतीत होता है। हालांकि, मृत्यु का असली कारण मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट होगा।

पाकिस्तान और तालिबान के सबसे बड़े दुश्मन ने भारत को भेजी दिवाली बधाई, देवबंद मदरसे को लेकर दी चेतावनी

अफगानिस्तान। अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अमरुल्लाह सालेह ने भारत और दुनिया भर के हिंदुओं को दिवाली की शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही उन्होंने दारुल उलूम देवबंद मदरसे को लेकर सतर्क रहने की चेतावनी भी दी।सालेह तालिबान और पाकिस्तान की सेना के जेहादी एजेंडे के कट्टर आलोचक हैं। अगस्त 2021 में काबुल पर तालिबान के कब्जे के समय वे उप राष्ट्रपति थे और बाद में तालिबान विरोधी नेता अहमद मसूद के साथ जुड़े। सालेह ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लिखा सभी भारतीयों और दुनिया भर के हिंदुओं को दिवाली की शुभकामनाएं! कृपया देवबंद मदरसे का ध्यान रखें।स्यह टिप्पणी हाल ही में तालिबान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी के भारत दौरे और देवबंद मदरसे के उनके दौरे से जुड़ी मानी जा रही है। भारत सरकार ने मुत्तकी को देवबंद जाने की अनुमति दी थी, जिसे लड़कियों की शिक्षा पर महीन संदेश के रूप में भी देखा गया। तालिबान के कई नेता पाकिस्तान के दारुल उलूम हक्कानिया मदरसे से पढ़े हैं, जो हनफी देवबंदी स्कूल का प्रचार करता है। हक्कानिया मदरसे के संस्थापक मौलाना अब्दुल हक ने दारुल उलूम देवबंद से शिक्षा ली थी, और उनके बेटे मौलाना समी उल हक को तालिबान का पितामह माना जाता है।

अश्लील हरकत का वीडियो बनाया तो घर में घुसकर मारपीट करने लगे पड़ोसी, प्राइवेट पार्ट पर मारीं लातें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के राजाजीपुरम इलाके में एक युवती के साथ छेड़छाड़ और मारपीट का दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। जहां पीड़िता ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके पड़ोसी कई दिनों से उसे देखकर अश्लील बातें करते थे और गंदी हरकतें करते थे। युवती ने शुरू में चुप रहना ही बेहतर समझा, लेकिन आरोपियों का हौसला इतना बढ़ गया कि एक दिन उनमें से एक युवक नग्न हालत में खड़ा होकर अभद्र हरकतें करने लगा। यह देखकर युवती ने साहस जुटाया और आरोपी का वीडियो बना लिया। बस यही बात आरोपियों को नागवार गुजरी।

पीड़िता का कहना है कि 3 अक्टूबर को आरोपी बाबूलाल, मोतीलाल, नीतू रावत, राहुल रावत, शिवानी रावत और राहुल की तीन बुआ उसके घर में जबरन घुस आए। उन्होंने युवती को जमीन पर पटक दिया और बेरहमी से पीटा। पीड़िता का आरोप है कि उन्होंने उसके प्राइवेट पार्ट पर लातों से वार किया, जिससे वह दर्द से तड़प उठी। शोर सुनकर जब युवती के पिता मौके पर पहुंचे, तो आरोपियों ने उन्हें भी डंडों और मुक्कों से पीट दिया। इसके बाद पूरा परिवार दहशत में आ गया।

55 वर्षीय सपा नेता सिराजुद्दीन सिद्दीकी का बुधवार को लखनऊ में निधन

खेतासराय, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कस्बा निवासी सपा नेता सिराजुद्दीन सिद्दीकी का बुधवार को लखनऊ में निधन हो गया। वह 55 वर्ष के थे इधर कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। मधुमेह से भी पीड़ित थे। परिवार के लोग उन्हें उपचार के लिए लखनऊ ले गए थे। सिराजुद्दीन सिद्दीकी सपा सुप्रीमो पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और प्रतापगढ़ के पूर्व सपा सांसद सीएन सिंह के काफी करीबी थे। समाजवादी पार्टी की सरकार में उन्हें शासन स्तर से सुरक्षा गार्ड भी मिला था। वह नगर पंचायत खेतासराय में समाजवादी पार्टी से उम्मीदवार के रूप में अध्यक्ष पद के दावेदार थे, लेकिन टिकट न मिलने पर उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती रेशमा को निर्दलीय चुनाव लड़ाया था। उनके निधन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अमिक जामई, सपा जिलध्यक्ष राकेश मौर्य, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता मोहम्मद आजम खां, समेत भारी संख्या में पार्टी नेताओं ने शोक संवेदना व्यक्त की है। उनके पैतृक आवास पर पहुंचकर सैकड़ों नागरिकों और सपा नेताओं ने उनके परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की है।

जब अखिलेश ने भारी सभा मे सिराज के नाम लेकर सबको चौकाया

खेतासराय, जौनपुर। समाजवादी पार्टी के विभिन्न प्रकोष्ठ में पार्टी के बड़े पदाधिकारी रहे है सिराज सिद्दीकी। समाजवादी पार्टी सभी बड़े कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति रही। जनपद में कई बार भरी सभा मे उनका नाम पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने लिया। जिससे पार्टी कार्यकताओं में खलबली मच जाती थी। सपा सुप्रीमों के बेहद खास रहे, यही कारण रहा कि राजधानी लखनऊ से लेकर जनपद भर के पार्टी कार्यक्रमो में उनकी भागीदारी रही। बेहद मिलनसार होने के चलते सभी के प्रिय थे। सपा कार्यकर्ता अशोक यादव बताते है कि वह पार्टी के वफादार सिपाही थे। उनके घर पर अखिलेश यादव आ चुके है।

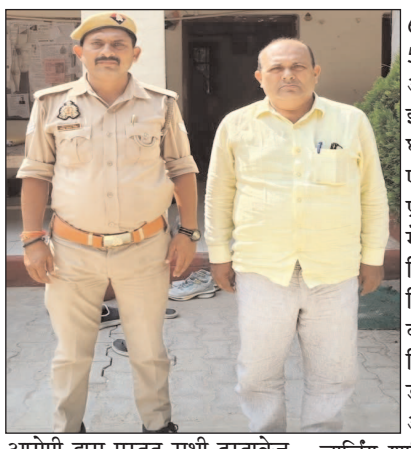

गुस्से में भाभी ने उठाया खौफनाक कदम, देवर का काटा प्राइवेट पार्ट, वजह जानकर रह जाएंगे हैरान

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में प्रेम-प्रसंग में धोखा देना एक युवक को महंगा पड़ गया है। मामला मऊआइमा थाना क्षेत्र के मलखानपुर का है, जहां एक भाभी ने अपनी बहन को प्यार में धोखा देने से गुस्सा होकर अपने देवर का प्राइवेट पार्ट काट दिया और मौके से फरार हो गई। युवक को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जानकारी के अनुसार, मलखानपुर निवासी राम आसरे के बेटे उमेश कुमार का अपनी भाभी की बहन के साथ पिछले करीब तीन साल से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। दोनों ने शादी करने तक का फैसला कर लिया था, और इस रिश्ते की जानकारी परिवार वालों को भी थी। उमेश के दूसरे भाई उदय कुमार की शादी कहली गांव की रहने वाली मंजू से करीब चार साल पहले हुई थी, और मंजू ही आरोपी भाभी है।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन करीब तीन महीने पहले उमेश ने अचानक प्रेमिका से शादी करने से इनकार कर दिया। उसने घर वालों को बताया कि वह किसी और से प्यार करता है और उसी से शादी करना चाहता है। देवर के इस फैसले से गुस्साई भाभी ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह नहीं माना। दूसरी ओर, प्यार में मिले धोखे से युवती (भाभी की बहन) गहरे डिप्रेशन में चली गई और उसने आत्महत्या करने तक की धमकी दे डाली। अपनी छोटी बहन को प्यार में मिले धोखे का बदला लेने के लिए गुस्साई भाभी ने एक खौफनाक योजना बनाई। 16 अक्टूबर की रात, जब देवर उमेश अपने कमरे में सो रहा था, तब करीब 2 बजे भाभी मंजू उसके कमरे में पहुंची। इसके बाद, उसने देवर के प्राइवेट पार्ट पर करीब चार बार वार कर उसे काट डाला। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी भाभी मौके से फरार हो गई। दर्द से कराह रहे युवक की आवाज सुनकर परिजन तुरंत उसके कमरे में पहुंचे और उसे आनन-फानन में स्थानीय अस्पताल ले गए। बाद में उसे एसआरएन के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों के अनुसार, करीब डेढ़ घंटे चले ऑपरेशन के बाद उमेश की जान बचाई जा सकी। पुलिस ने परिजन की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है और फरार आरोपी भाभी की तलाश शुरू कर दी है।

फर्जी बैनामा और सरकारी योजनाओं के नाम पर ठगी करने वाला गिरफ्तार

सरकारी आवास, सौर ऊर्जा संयंत्र और जमीन दिलाने के नाम पर ठगे थे 18 लाख रुपए

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। थाना चंदवक पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए ऐसे ठग को गिरफ्तार किया है, जो लोगों को सरकारी योजनाओं और जमीन के नाम पर झांसा देकर लाखों रुपये हड़प लेता था। आरोपी ने फर्जी दस्तावेज बनाकर एक व्यक्ति से करीब 18,08,863 (अठारह लाख आठ हजार आठ सौ तिरसठ रुपये) की ठगी की थी।

पुलिस के अनुसार, 29 जून 2025 को अभियुक्त अशोक यादव पुत्र स्व. शोभनाथ यादव निवासी ग्राम तराँव, थाना चंदवक, जनपद जौनपुर ने वादी से यह कहकर रकम वसूल की कि वह उसे सरकारी आवास, सौर ऊर्जा संयंत्र और कास्तकारी जमीन दिला सकता है। आरोपी ने विश्वास में लेकर विभिन्न योजनाओं से संबंधित कूटरचित दस्तावेज भी उपलब्ध कराए। लेकिन काफी समय बीत जाने के बाद जब न तो सरकारी आवास मिला, न ऊर्जा संयंत्र और न ही जमीन का बैनामा हुआ, तब वादी ने पैसा वापस मांगा। उस पर आरोपी ने गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी दी। जाँच में पता चला कि आरोपी द्वारा प्रस्तुत सभी दस्तावेज जाली, फर्जी और बनावटी थे। इस आधार पर थाना चंदवक में मु.अ.सं. 198/2025 धारा 316(2), 319(2), 318(4), 338, 336(3), 340(2), 352, 351(2) बी.एन.एस. के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। थानाध्यक्ष चंदवक के नेतृत्व में पुलिस टीम ने लगातार खोजबीन करते हुए आरोपी को ग्राम अमुवार मेन रोड से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी से पूछताछ जारी है और उससे अन्य संभावित पीड़ितों की जानकारी जुटाई जा रही है। मोटोरोला ने स्मार्टफोन्स पर आकर्षक डील्स की घोषणा की

रांची। मोटोरोला ने फ्लिपकार्ट की बिग बैंग दिवाली सेल 2025 के लिए अपने लोकप्रिय स्मार्टफोन्स मोटोरोला एज 60 प्रो, मोटोरोला एज 60 फ्यूजन, मोटो जी96 5जी, मोटो जी86 पावर, और मोटोरोला रेजर 60 झ पर भारी छूट की घोषणा की है। मोटोरोला एज 60 प्रो में पैंटोन प्रमाणित ट्रिपल 50 मेगापिक्सेल कैमरा सिस्टम, दुनिया का सबसे टिकाऊ 6.7, 1.5 के ट्रू कलर क्वाड-कर्व्ड डिस्प्ले, 6000 एमएएच डक्सोमार्क गोल्ड बैटरी, और 90 वाट टर्बोपावर चार्जिंग शामिल है। यह 24,999 रुपये (8 प्लस 256जीबी), 28,999 रुपये (12 प्लस 256जीबी), और 32,999 रुपये (16 प्लस 512जीबी) पर उपलब्ध है। मोटोरोला एज 60 फ्यूजन 18,999 रुपये (8 प्लस 256जीबी) और 20,999 रुपये (12 प्लस 256जीबी) पर उपलब्ध है। मोटो जी96 5जी 14,999 रुपये (8 प्लस 128जीबी) और 16,999 रुपये (8 प्लस 256जीबी) में मिल रहा है। मोटो जी86 पावर 14,999 रुपये में उपलब्ध है। मोटोरोला रेजर 60, दुनिया का पहला वीडियो जेस्चर कंट्रोल वाला फ्लिप फोन, 39,999 रुपये में उपलब्ध है। मोटोरोला के प्रीमियम ईयरबड्स, क्यूलेड और मिनी एलईडी टीवी भी इस सेल के दूसरे चरण में विशेष दामों पर मिलेंगे।

नेतन्याहू का कड़ा रुख: अमेरिका का गुलाम देश नहीं, सुरक्षा का फैसला खुद करेंगे

इजराइल। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से गाजा युद्धविराम समझौते की प्रगति पर चर्चा से पहले कहा कि इजराइल अमेरिका का संरक्षित देश नहीं है और अपनी सुरक्षा का निर्णय स्वयं करेगा। उनका यह बयान जनता में यह आशंका कम करने के उद्देश्य से आया कि अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा बल की उपस्थिति इजराइल की हमले की क्षमता को सीमित कर सकती है। वेंस ने बैठक से पहले कहा कि हमास को निरस्त्र करना और गाजा का पुनर्निर्माण करना चुनौतीपूर्ण कार्य है। उन्होंने यह भी बताया कि सुरक्षा बल की संरचना पर विचार-विमर्श चल रहा है और उन्होंने तुर्की और इंडोनेशिया जैसी देशों से सैनिकों की तैनाती की उम्मीद जताई। इजराइल ने दो और बंधकों के शवों की पहचान कर ली है। रेड क्रॉस द्वारा सौंपे गए शव एरी जलमानोविच और तामीर अदार के हैं, जो 7 अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा किए गए हमले में मारे गए थे। युद्धविराम के बाद अब तक 15 बंधकों के अवशेष इजराइल को लौटाए जा चुके हैं, जबकि 13 बंधकों को अब भी सौंपना बाकी है। साथ ही, गाजा के दीर अल बलाह कब्रिस्तान में 54 फलस्तीनियों को दफनाया जाएगा। दफनाने से पहले शवों को खान यूनिस स्थित नासिर अस्पताल के बाहर प्रदर्शित किया गया। बैठक में अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दामाद जेरेड कुशनर और पश्चिम एशिया के लिए अमेरिकी दूत स्टीव विटकॉफ भी शामिल थे।

रजत चल-प्रतिमा की शोभायात्रा बनी आकर्षण का केंद्र

-सुरेश गांधी

वाराणसी. कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर जब संपूर्ण काशी दीपों की उजास में नहाई हुई थी, तब श्री काशी विश्वनाथ धाम में अन्नकूट महोत्सव का भव्य आयोजन श्रद्धा, उत्साह और आध्यात्मिक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। यह महोत्सव न केवल आस्था का उत्सव था, बल्कि यह अन्न के प्रति कृतज्ञता, सहयोग और सनातन संस्कृति की आत्मा का प्रतीक भी बना।

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत की पूजा की स्मृति में मनाया जाने वाला यह पावन पर्व अन्नकूट प्रकृति और ईश्वर के प्रति आभार का प्रतीक है। बाबा विश्वनाथ के दरबार में जब अन्न और मिठाई के 21 क्विंटल प्रसाद से श्रृंगार हुआ, तब पूरा धाम दिव्यता से आलोकित हो उठा।

21 क्विंटल मिष्ठानों से सजा बाबा का दरबार

धाम के गर्भगृह से लेकर गलियारों तक, हर ओर भक्ति और उल्लास की तरंगें उमड़ रही थीं। भगवान श्री विश्वेश्वर महादेव का श्रृंगार 21 क्विंटल विविध मिष्ठानों से किया गया, जिनमें छेना, बूंदी लड्डू, काजू बर्फी, मेवा लड्डू, पेड़ा और पारंपरिक मिठाइयां प्रमुख थीं। सुगंधित धूप और पुष्पमालाओं से सजे धाम में घंटियों की अनुगूंज और हर-हर महादेव के जयघोष ने वातावरण को अलौकिक बना दिया। धाम प्रशासन की ओर से व्यवस्था और सुरक्षा की विशेष तैयारियां की गई थीं। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बावजूद हर दिशा में अनुशासन और श्रद्धा का समावेश दिखाई दिया।

रजत चल-प्रतिमा की शोभायात्रा बनी आकर्षण का केंद्र

प्रातःकालीन बेला में महंत परिवार के आवास टेढ़ीनीम से भगवान श्री विश्वनाथ, माता गौरी और गणेश जी की पंचबदन रजत चल-प्रतिमा की भव्य शोभायात्रा प्रारंभ हुई। शहनाई, डमरू और शंखनाद की गूंज के बीच जब चल-प्रतिमा गर्भगृह पहुंची, तो पूरा धाम भक्तिरस से सराबोर हो उठा। वैदिक मंत्रोच्चारण और दीपों की पंक्तियों के बीच जब बाबा विश्वनाथ की मध्याह्न भोग आरती सम्पन्न हुई, तब ऐसा प्रतीत हुआ मानो काशी में स्वयं देवताओं का आगमन हो गया हो।

भोग और प्रसाद वितरण : आस्था का उत्सव

भोग आरती के पश्चात भगवान विश्वेश्वर को अन्न, फल, मिष्ठान और पंचामृत अर्पित किया गया। इसके बाद श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया गया, जिसमें खिचड़ी, पूड़ी, सब्जी, मिठाई और पंचामृत शामिल थे। सैकड़ों भक्तों ने अन्नदान का संकल्प लिया। अनेक सामाजिक संस्थाओं और सेवाभावी संगठनों ने मंदिर परिसर में निशुल्क भोजन वितरण कर इस परंपरा को जीवंत किया। अन्नकूट पर्व की यह परंपरा इस भाव को प्रकट करती है कि अन्न केवल जीवन का आधार नहीं, बल्कि दान और कृतज्ञता का माध्यम भी है।

अन्नकूट : समरसता, सेवा और सनातन एकता का प्रतीक

अन्नकूट पर्व सनातन समाज की एकता और आध्यात्मिकता का जीवंत प्रतीक है। इस दिन सभी वर्ग, जाति और समुदाय के लोग एक साथ आकर अन्न, भक्ति और आनंद का उत्सव मनाते हैं। यह पर्व यह संदेश देता है कि सच्ची भक्ति केवल आराधना नहीं, बल्कि सेवा, सहयोग और प्रेम का भाव है। भगवान श्रीकृष्ण के गोवर्धन लीला की स्मृति में मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति, अन्न और जीवों के प्रति सम्मान का अद्भुत उदाहरण है।

दीपों की पंक्तियों में झिलमिलाती गलियाँ, फूलों से सजे द्वार और हर दिशा में गूंजता हर-हर महादेव, यह दृश्य केवल आयोजन नहीं, बल्कि काशी की आत्मा का उत्सव था। धूप, गंगाजल और मंत्रों की सुवास में डूबे श्रद्धालुओं ने जब बाबा के चरणों में सिर झुकाया, तो उनके चेहरे भक्ति और संतोष से आलोकित हो उठे। अन्नकूट महोत्सव ने एक बार फिर सिद्ध किया कि काशी केवल एक नगर नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति का जीवंत तीर्थ है, जहाँ भक्ति, दान और कृतज्ञता जीवन का अंग हैं। अन्नकूट का संदेश स्पष्ट है, अन्न केवल पेट की भूख नहीं मिटाता, यह आत्मा की तृप्ति भी देता है। भगवान विश्वेश्वर के चरणों में अर्पित यह अन्न समर्पण और सेवा की भावना का प्रतीक है। काशी विश्वनाथ धाम में संपन्न यह अन्नकूट महोत्सव इस वर्ष भी उसी संदेश के साथ समाप्त हुआ, ह्नजहाँ अन्न है, वहाँ अन्नदाता का आशीर्वाद है, और जहाँ भक्ति है, वहाँ बाबा विश्वनाथ का सान्निध्य।